प्रेम पत्र



स्वर्गीय चैपलिन साहब,

आपका इस दुनिया से उठ जाना दुनिया भर के हंसी के दीवानों के लिए दुःखदायी है। आपने अपने आवारा मस्तमौला की भूमिका द्वारा लोगों को खूब रिझाया। रोतों को हंसाया। आपकी एक ही असफलता रही कि आप कम्यूनिस्ट विरोधी अमरीकी सरकार को रिझा न सके और उसने आपको आपकी कम्यूनिस्ट विचारधारा के कारण देश से निकाल दिया। बाद में उन्हें भी अपनी गलती महसूस हुई होगी—ब्रिटेन की महारानी ने भी आपको सम्मानित किया।

खैर जो होना था सो हो गया। आप इस धरती की फिक्र न करें कम से कम भारत के हंसी के दीवानों को तो मैं सम्भाल ही लूंगा। उन्हें अनाथ नहीं होने दूंगा। मैं आपकी टूटी हुई घड़ी, बदरंग जूते, थैलानुमा पेंट और हैट जो आप फिल्मों में पहना करते थे को प्राप्त करने की कोशिश करूंगा ताकि शोकेस में सजाकर अपने आफिस में रख सकूं।

आप एक काम जरूर कीजिये, सुना है आजकल स्वर्ग में उदासी बहुत छायी रहती है, फरिश्ते कुर्सियों के लिए आपस में लड़ते रहते हैं। भगवान ने स्वर्ग की राजनीति में दखल देना छोड़ दिया है वहाँ भी आप हंगामा खड़ा कीजिये उदासी और मनहूसियत से स्वर्ग को छुटकारा दिलाइये।

फिर भारत में जन्म लीजिये यह बात मैं इसलिये कह रहा हूं कि इससे दीवाना के पाठकों में एक की और वृद्धि हो जायेगी।

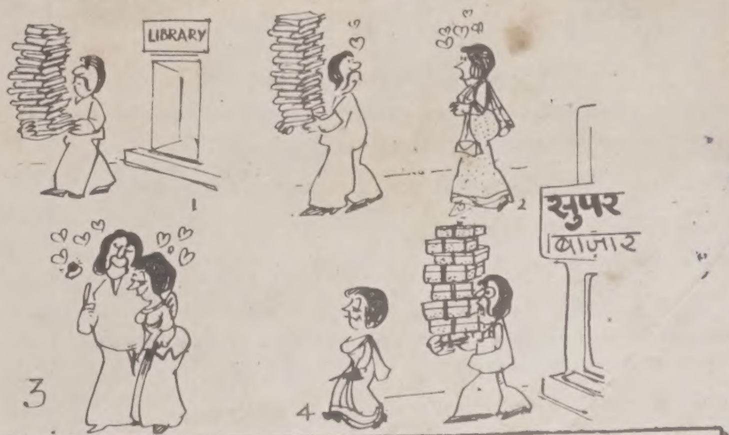
भगवान आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

आपका

चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

हंसते हंसते बिदा करो
बीता साल पुराना
नये साल को अक्ल से
अच्छी हिट लगाना।



दीवाना

अंक : १, ५ जनवरी से ११ जनवरी १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
उपसहसम्पादक : कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-2

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस



प्रश्न दीवाना के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के

सतीश कुमार शर्मा, अबोहर (पंजाब)

प्र० : बिगड़े दिल लड़कों को ठीक करने का उपाय ?

उ० : पल्ले उनके बांधिए, चतुर-चंट सी 'बाम',
बुद्धि शुद्ध हो जायगी, मुंह में पड़े लगाम ।

****

चन्द्रभान अनाड़ी, जबलपुर

प्र० : जब दो दिल मिलते हैं तो शोले भड़कते हैं, लेकिन जब बिछुड़ते हैं तब ?

उ० : जवानी जोश में मिलते हैं दिल, शोले भड़कते हैं,
खुदा जब जुदा करता है तो दोनों ही तड़पते हैं ।

****

लक्ष्मण कुमार केसान, असरगंज (भागलपुर)

प्र० : सत्रह-अठारह वर्ष की उम्र में पढ़ाई में मन क्यों नहीं लगता ?

उ० : चढ़ती-बढ़ती उम्र में यौवन लेत हिलोर,
मन में होती गुद-गुदी, तन होता बरजोर ।

****

विजय कुमार सेन, रेवाड़ी

प्र० : अगर आपको क्रिकेट का कप्तान बना दिया जाए ?



उ० : काका क्रिकेट से डर, कभी न देखें झांक,
टूट जाएगी नाक या फूट जाएगी आंख ।

****

आनन्द कुमार खंडेलवाल, सासाराम

प्र० : बेलन देखकर पति चुप हो जाता है, लेकिन वही पत्नी अपनी सास को बेलन दिखाए तो ?

उ० : पद ऊंचा है सास का, मिलती उसको छूट,
मारे चकला फेंककर, बेलन जाए टूट ।

****

रमेश चन्द कौशिक, दिल्ली

प्र० : कभी-कभी आपको जिंदगी सुनसान भी लगती है क्या ?

उ० : काका कवि के काव्य पर, नहीं हंसे जब कोय,
जीवन सूना सा लगे, बहुत कोफ्तगी होय ।

****

सुरेन्द्र कांठेड़, भीलवाड़ा (राजस्थान)

प्र० : आपने भविष्यवाणी की थी कि कांग्रेस की मिनिस्ट्री बनेगी, वह गलत हो गयी ?

उ० : सच्चे दिल से उस समय, लिखते सच्चे छन्द
ताली दुश्मन पीटते, काका होते बन्द ।

****

मो० तौहीद 'अख्तर', खगोल (पटना)

प्र० : बच्चों को गुमराह मां-बाप करते हैं या दोस्त

उ० : शर्म छोड़कर भूलते निज कर्तव्य-स्वधर्म,
बच्चों को गुमराह खुद करते उनके कर्म ।

****

मुमताज खान 'दीवाना', जमशेदपुर

प्र० : अगर आपको प्रधानमन्त्री बना दिया जाए तो

उ० : प्रधानमन्त्री का अगर पद पा जायें हम,
पानी बन्द नलों से निकले ठर्रा-व्हिस्की-रम ।

****

सुभाष चन्द्र अग्रवाल, पेंड्रा (बिलासपुर)

प्र० : मृत्यु के समय मुंह में अमृत रूपी गंगाजल डा भी इन्सान मर क्यों जाता है ?

उ० : मुरारजी से पूछ लो, होय समस्या हल,
नहीं मरेगा डालिए मुंह में 'जीवन जल' ।

****

सुरेन्द्र प्रजापत, लालगढ़ (बीकानेर)

प्र० : अगर 'दीवाना' की बंदूक से काका के कारतूस जाएं तो ?

उ० : पाठक बुक-स्टाल में मुफ्त पढ़ें चुपचाप,
पैसे देकर के नहीं उसे खरीदें आप ।

****

अविनाश कोहली, दिल्ली

प्र० : चाट के पत्ते और सुन्दरी नारी में क्या फर्क है

उ० : दोनों चीजें चटपटी, काका हुए अचेत,
मुंह में पानी आ गया, जीभ लपेटा लेत ।

****

अब्दुल जब्बार, बीकानेर

प्र० : शीशी भरी गुलाब की पत्थर पे फोड़ दूं,
उत्तर नहीं मिलेगा तो खत लिखना छोड़ दूं ?

उ० : धमकी से डर गए हैं, उत्तर दे रहे तुम्हें,
मत फोड़ो मियां शीशी, साबुत भेज दो हमें ।

****

छुट्टनलाल, राय कवार, उज्जैन

प्र० : जवानी के दिनों में आपके प्रति काकी का व्य रहता था ?

उ० : हमसे होती कुछ गलती तो वह भृकुटी टेढ़ी कर
कमरे में पग धरतीं तब दिल में धुक-धुक होने

****

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारत
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर
नई दिल्ली-११०००

1—78

पौंगा पंडित की भविष्य वाणी

फिल्म स्टारों के बारे में दीवाना के लिए विशेष



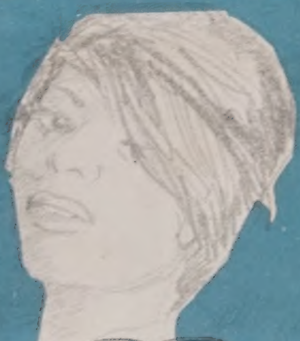
योगिता बाली

योगिता किशोर कुमार के गानों के रिकार्ड तोड़ देगी और निर्माताओं के पीछे कांट्रेक्टों के लिए दोबारा ऐसे ही जायेगी जैसे खोटा नोट मुड़-मुड़ कर आता है।



जरीना बहाव

बासु चटर्जी से फोन पहले से ज्यादा आयेंगे। नाक बन्द रहा करेगी। याददाश्त कमजोर हो जायेगी। शूटिंग के बाद साड़ी लौटाना भूल जायेगी।



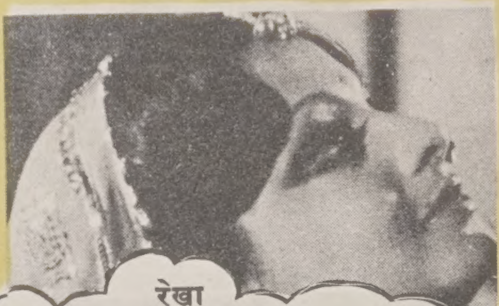
काजल किरण

मोटापा बढ़ेगा, नये कांट्रेक्ट मिलेंगे। खुशी के मारे मोटापा और ज्यादा बढ़ जायेगा और उस मोटापे को देख प्रोड्यूसर भाग जायेंगे और पुराने कांट्रेक्ट भी कैंसिल कर देंगे।



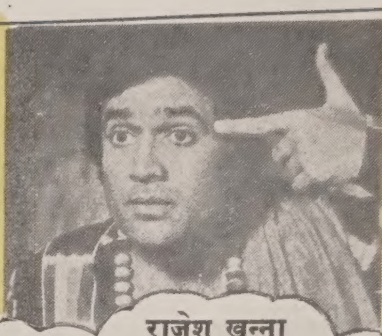
सोमा आनन्द

प्रोड्यूसरों द्वारा ऑफरों की बरसात आयेगी। (हम सहारा रेगिस्तान के बरसात की बात कर रहे हैं) घर बैठे-बैठे टेलीफोन एंगेज्ड रखने के लिए दिन में सौ बार एंक्वायरी से क्रिकेट स्कोर पूछेगी।



रेखा

पैट्रोल का बिल और ज्यादा आयेगा। क्योंकि उसकी कार खंडाला और ज्यादा बार जायेगी। शादी-शुदा एक्टरों की बीवियों की आहें उसे लग जायेंगी। उन आहों के कारण रेखा और अधिक लोकप्रिय हो जायेगी।



राजेश खन्ना

एक और फ्लॉप वर्ष, ससुराल वाले जान खायेंगे। चमचे सारे किसी और स्टार की आराधना में लीन होने के लिये चले जायेंगे। बीवी ऐसे देखेगी जैसे खोटा सिक्का देख रही हो।



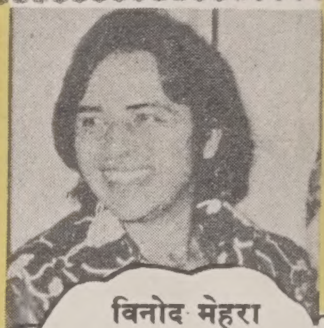
अमिताभ बच्चन

बीवी से खटपट होगी, मारपीट के सीनों में और ज्यादा निखार आयेगा क्योंकि अमिताभ बीवी से लड़कर सैट पर जायेगा तो गुस्से में मारपीट के सीनों में जान डाल देगा।



सारिका

अपने साथी एक्टरों से और झड़पें होंगी। सचिन से १८३६ बार कुट्टी होगी। कुत्ते को प्रायः नजला जुकाम हुआ रहेगा। उस कारण भी स्वभाव और चिड़चिड़ा हो जाएगा।



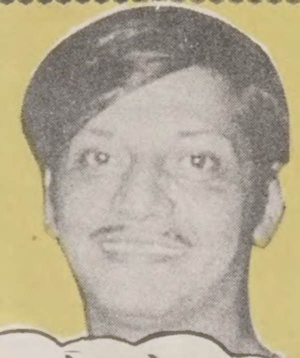
विनोद मेहरा

नये वर्ष में काफी एक्स्ट्रा के रोल मिलेंगे। बड़ी कार बेच कर स्कूटर ले लेने के विचार कई बार दिल में आयेंगे। मां शादी पर जोर देगी।



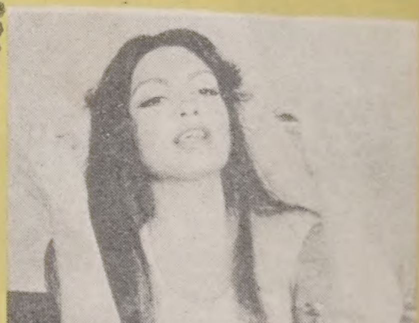
राखी

राखी ने अपने कमरे में गुलज़ार की जो फोटो लगा रखी है उसे चूहे कुतर जायेंगे।



अमोल पालेकर

अमोल घर में घरौंदे सजायेगा, बीवी छोटी-सी बात के लिए भी उससे सलाह मांगेगी। पार्टियों में अमोल पहले तो एक ही हाथ में पैग लेकर फोटो खिंचवाता था। अब दोनों हाथों में पैग लेकर खिंचवायेगा।



परवीन बॉबी

सपनों में कबीर बेदी दिखाई देगा। सुबह उठने पर चप्पल आसानी से नहीं मिलेंगी। करवटें अधिक बदलने के कारण खटिया टूट जायेगी।

परोपकारी



बात-बे-बात की



अर्थ अनर्थ

आशीष कुमार—उमरिया

● सर में तेल न लगाने से बाल उड़ने लगते हैं।

कबूतरों की तरह हवा में या…?

****

मो० अशरफ अली खाँ—पटना

● एक लड़का अपने मित्र से बोला, 'मैं खुशी से फूल गया।'

क्या खुशी भी गैस की तरह आदमी को फुला देती है?

****

मनोज मलिक—जबलपुर

● मेरा कारखाना आजकल तेजी से चल रहा है।

कारखाने के क्या पाँव लग गये हैं?

****

कु० कान्ता ठाकुर—इन्दौर

● शिक्षक छात्रों से, 'हमें कभी भी लड़ाई मोल नहीं लेनी चाहिये।'

लड़ाई भी बाजार में बिकती है क्या?

****

अवध किशोर—जबलपुर

● अरे मेरी चैन चढ़ा दो।

साईकिल की या…?

****

कमल जैन—दिल्ली

● मोहित का बच्चा मेरी हर बात काट देता है।

छुरी से या…?

****

शफदर आजम शबीना—बरेली

● दीवाना में लिखा था—प्रतियोगिता में बालों वाली टोपी जीतिये।

टोपी के ऊपर बाल होंगे या सिर के बालों पर ढकने वाली टोपी की बात हो रही है?

****

श्रीरामपुत्र—गोरखपुर

● मैं ऊपर जा रहा हूं तुम चाय बना लेना।

अल्ला मियाँ के पास जा रहे हो या ऊपर वाले कमरे में?

****

श्री निवास गोयनका—कटनी

● भीड़ बहुत है लोगों के देख-देखकर ब्रेक मारो।

गाड़ी का ब्रेक लगाना है या लोगों के…

प्रहलाद जसवानी—मण्डला

● दुकानदार नौकर से बोला, 'इन साहब को जूता दिखाओ।'

ग्राहक भगाना चाहते हो तो साफ-साफ क्यों नहीं बताते?

● प्रीति टाकीज में कल नौकरी लग लग रही है।

किसकी नौकरी? या फिल्म नौकरी।

****

अशोक सोनी—जयपुर

● तुमने बेटे को सिर पर चढ़ा रखा है।



झूठ मत बोलो, बेचारा नीचे ही तो खड़ा है।

● ग्राहक दुकानदार से, 'मेरे पैसे काट लो।'

किस औजार से काटना है यह और बता दो?

****

विनोद प्रकाश अग्रवाल—सोजत रोड

● एक पत्रिका में लिखा था, 'मनुष्य गम खाता है।'

चिपकाने वाला गम (गोंद) या…

****

मनोज भगत—भोजपुर

● मरीज डाक्टर से, 'मुझे सर्दी की दवा चाहिए।'

सर्दी लगने की या सर्दी दूर करने की?

● चमड़ा व्यापारी दूसरे व्यापारी से, 'आप कल अपने चमड़े का नमूना पेश करना।'

व्यापारी उसका चमड़ा देखना चाहता है या उसकी खाल में भुस भरने का इरादा है?

****

योगेश कुमार—डीमापुर

● राधेश्याम, 'क्या कर रहे हो?'
घनश्याम, 'घर की सफाई कर रहा हूं।'

चोरी कर रहे हो या…

● सज्जन, 'मेरा एक दांत दर्द कर रहा है।' बजरंग, किसी दांतों वाले डाक्टर को दिखाओ।'

किसी डेंटिस्ट की बात कर रहे हो या मुंह में दाँतों वाले किसी आदमी की?

● मालिक आपकी खाट खड़ी कर दूं, 'नौकर ने पूछा।'

लगता है नौकर के इरादे नेक नहीं हैं।

****

रविन्द्र कौर—आरा

● आज महफिल में आनन्द आ गया।

मजे वाली बात है या आनन्द कोई व्यक्ति विशेष है?

****

दया सिंह—आरा

● आज के युग में शरीफों की बहुत कमी हो गयी है।

खाने वाले शरीफों (फल) की बात हो रही है या…

****

उमेद सिंह—अल्मोड़ा

● हवलदार बोला, 'अच्छा अब मुझे इजाजत दीजिये। मुझे बस पकड़नी है।'

क्या बस ने कोई गुनाह कर दिया है?

****

इकबाल अन्सारी—बम्बई

● 'मुझे एक दीवाना चाहिए', लड़की बुक स्टाल वाले से बोली।

दीवाना पत्रिका…या…?

****

बिसार अहमद—दरभंगा

● राजू चिल्ला-चिल्लाकर मम्मी के कान खा गया।

खाने को भोजन नहीं मिला था क्या?

****

सुरेन्द्र अरोड़ा—रिवाड़ी (हरियाणा)

● अध्यापक छात्रों से, 'तुम मेरे हाथों के जूते खाए बिना नहीं मानोगे।'

क्या आजकल हाथों के जूते भी बनने लगे हैं?

****

अतुल दास—अजमेर

● एक मित्र दूसरे से बोला, 'मैं फिल्म नहीं देखता परन्तु आपकी खातिर देख लूंगा।'

फिल्म 'आपकी खातिर' देखने का इरादा या मित्र की खातिर कोई भी फिल्म देख लोगे।

****

सज्जन सिंह भारद्वाज—नागदा

● एक महिला डाक्टर से बोली, 'कल मेरे लड़के की दोनों आंखें आ गयीं।'

क्या पहले वह अन्धा था?

अर्थ-अनर्थ
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

नया वर्ष

विभिन्न लोगों के लिए क्या-क्या अर्थ
रखता है। एक दीवाना अर्थ कोष




कुत्तों के मालिकों के लिये।
कमेटी के दफ्तर के चक्कर।
नया टोकन बनवा लो।
दफ्तर के बाबुओं के लिये।
सरदर्द जुकाम
ज्यादा सरदर्द और जुकाम, क्योंकि
नई कैजुअल लीव जो ड्यू हो गई हैं
उसे अवेल करना है।
आम व्यक्तियों के लिये।
१५ रु० की चपत
अपना नये साल का रेडियो लायसैंस
रिन्यू करवा लीजिये।
कुछ लोगों के लिये।
तीसरे विश्व युद्ध की शुरुआत
युद्ध-नये साल के कैलेण्डर को मुफ्त
हथियाने के लिये घोर और भयंकर
दांव-पेच लड़ाने का समय।
बीबी के लिये
एक नया मौका
यह कहने का कि सिगरेट छोड़ दो।
नये साल में यही संकल्प कर लो।
मदिरा प्रेमियों के लिये
न्यू इयर ईव को १२ बजे की इन्त-
जारी में ज्यादा शराब पीने के कारण
सुबह सिरदर्द से फटा जाता है।

नया धारावाहिक उपन्यास

खौफनाक आवाजें

लेखक :- कैप्टन युद्धवीर

भाग-३

सेठ रघुनन्दन क्लब में व्हिस्की पीते रहे और आँधी-तूफान में धर्मवीर पाण्डे उनकी कार चुराकर ले गया। उनकी पत्नी और बेटियों को वह यह धोखा देकर कार में ले चला कि सेठ जी हास्पिटल में घायल पड़े हैं। वीराने में आकर वह रुपया-जेवर लूटकर चलता बना। सेठ जी अपने दोस्त के साथ उनकी कार में घर पहुंचे तो उनके बेड रूम में एक लाश उनका इन्तजार कर रही थी। पुलिस ने सेठ जी को ही हत्यारा समझना शुरू किया तो उन्हें मशहूर जासूस बलजीत का सहारा लेना पड़ा। लाश के एक सूटकेस में से भयानक खिलौने निकले तो सभी हैरान रह गए।

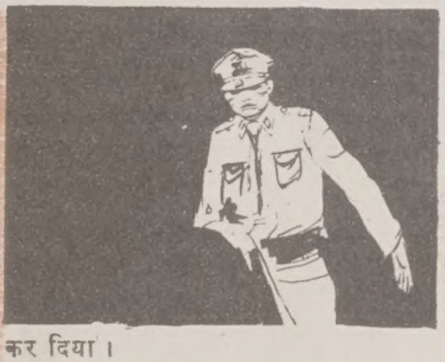
'जयदयाल की मौत हुए छब्बीस-सताइस घंटे बीत चुके हैं। मौत का कारण अभी मैं नहीं जान सका। न तो बदन पर किसी घाव का निशान है, न चेहरे पर ही जहर का असर है। पोस्ट-मार्टम के दौरान ही पता चल सकेगा कि मौत कैसे हुई।' पुलिस-डाक्टर ने कहा।

'क्या मैं भी लाश को एक नजर देख सकता हूं ?' बलजीत ने पूछा।

'क्यों नहीं !'

बलजीत आगे बढ़ा और लाश पर झुक गया। छह-सात मिनट तक वह लाश को देखता रहा। इसके बाद वह सीधा खड़ा हो गया और पुलिस-डाक्टर से बोला, 'लाश के चेहरे और छाती पर चमक-सी है। मृतक शायद कोई खास चीज मल कर नहाया करता था।'

पुलिस-डाक्टर ने जवाब देने की बजाए जयदयाल के निर्जीव चेहरे को घूरना शुरू



कर दिया।

बलजीत ने कहा, 'डाक्टर साहब ! आपने मृतक की छाती को सूंघ कर नहीं देखा। आपकी यह धारणा गलत है कि जयदयाल की मौत को छब्बीस या अट्ठाइस घंटे बीत चुके हैं।'

'आपकी क्या राय है ?' डाक्टर ने हैरानी से पूछा।

'यह लाश कम-से-कम पांच दिन पुरानी है। आप छाती सूंघ कर देखेंगे तो आपको अभी पता चल जाएगा कि लाश सुरक्षित रखने के लिए मसाला लगाया गया है।'

बलजीत की बात सुन कर सभी दंग रह गए। सबसे ज्यादा हैरानी पुलिस-डाक्टर को हुई।

बलजीत ने कहा, 'जयदयाल की लाश को पांच दिन तक किसी खास मनोरथ के लिए सम्भाल कर रखा गया। तब इसे लिबास पहना कर यहां लाया गया और अलमारी में टांग दिया गया।'

इस रहस्य के खुलने पर सभी की आंखें फैल गईं।

पलभर कुछ सोचने के बाद बलजीत ने पूछा, 'क्या मृतक के लिबास की तलाशी ली गई है ?'

'जी हाँ।' एक पुलिस-कर्मचारी ने उत्तर दिया।

'वो चीजें कहाँ हैं जो इसके लिबास की जेबों से निकाली गईं ?'

'इस मेज पर अलग-अलग बंधी पड़ी हैं।'

'क्या कुछ निकला है ?'

पुलिस-कर्मचारी ने सारा ब्यौरा दे दिया।

'क्या आप वो दोनों पत्र मुझे दिखा सकते हैं ?' बलजीत ने पूछा।

'क्यों नहीं !' यह कह कर पुलिस-कर्मचारी ने मेज पर से वही पोटली उठाई, जिसमें दोनों पत्र बंधे हुए थे। पोटली खोल कर उसने दोनों पत्र बलजीत को दे दिये।

पत्र पढ़ कर बलजीत मुस्कराया और बोला, 'ये दोनों पत्र दो आदमियों ने नहीं लिखे।'

'क्या मतलब ?' पुलिस-डाक्टर चौंक उठा।

बलजीत ने कहा, 'मेरा मतलब है, आप अगर यह समझ बैठे हैं कि एक पत्र कातिल ने लिखा और दूसरा मृतक ने, तो आपका यह अनुमान झूठा है।'

'तो सच क्या है ?'

'सच यह है कि दोनों पत्र एक ही आदमी के लिखे हुए हैं।'

'अब यह सुन कर सभी चकित रह गए।'

'डाक्टर साहब ! यह तो पक्की बात है कि मरने वाले ने ये पत्र नहीं लिखे। हां, कातिल एक कहानी-सी बनाने या पुलिस को धोखा देने के लिए दो पत्र जरूर लिख सकता है।'

'धोखा कैसा ?'

'एक पत्र जयदयाल के नाम और एक पत्र जवाब में सत्यदेव के नाम लिखा गया, ताकि पुलिस दो आदमियों के लिखे हुए दो पत्र समझे।'

'आपने तो बड़ी अजीब बात खोल डाली है। इसका मतलब यह हुआ कि इन्स्पेक्टर शर्मा बेकार में ही जयदयाल के बारे में पूछ-ताछ कर रहे होंगे।'

'पता करना जरूरी है, मगर मेरे विचार में बेकार रहेगा।'

'वह कैसे ?'

'वह ऐसे कि जयदयाल का यह सही पता नहीं हो सकता। पत्र में जो पता लिखा गया है, वहां जयदयाल नहीं रहता था। मैं तो यहां तक कहूंगा कि पत्र में चाहे मृतक

का नाम जयदयाल लिखा गया है, मगर यह इसका असली नाम नहीं होगा। हमें जान-बूझ कर धोखे में रखने के लिए ही ये नकली नाम, नकली पते और नकली पत्र लिखे गए।'

बलजीत ने इतना ही कहा था कि कदमों की आहट उभरी।

दो क्षण बाद इन्स्पेक्टर शर्मा ने प्रवेश किया। वह बलजीत को वहां मौजूद देखकर खिल उठा। उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा, 'हल्लो बलजीत बाबू ! आप और यहां ! अचम्भा है मेरे लिए।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! आदमी से आदमी के मिलाप का बहाना निकल ही आता है।' बलजीत ने हाथ मिलाते हुए कहा।

'क्या जयदयाल अपने लिखे हुए पते पर रहता था ?' पुलिस-फोटोग्राफर ने पूछा।

'नहीं।' इन्स्पेक्टर ने जवाब में कहा, 'उस पते पर जयदयाल नामक कोई आदमी नहीं रहता था।'

'ओह ! बलजीत बाबू पहले ही हमें बता चुके हैं कि यह पता नकली है। डाक्टर ने कहा, 'इनकी यह भी राय है कि मृतक का नाम भी जयदयाल नहीं है।'

बलजीत को इन्स्पेक्टर शर्मा चकित आँखों से देखने लगा।

पुलिस-फोटोग्राफर बोला, 'बलजीत बाबू ने यह भी कहा है कि यह लाश पांच दिन पुरानी है। इसे गलने-सड़ने से बचाने के लिए कोई मसाला काम में लाया गया है। बलजीत बाबू का कहना है कि लाश को इतने दिन तक सुरक्षित रखने के पीछे कोई खास भेद है।'

बलजीत ने मुस्कराते हुए कहा, 'हाँ, मैं लाश की जांच करके इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि मरने वाले का नाम जयदयाल नहीं है। इसे दम घोंट कर मारा गया है। अगर इस तरीके से नहीं मारा गया तो बिजली के करेंट से इसे मारा गया है।

इन्स्पेक्टर शर्मा की हैरानी अपनी सीमा पर पहुंच गई। उसने कहा, 'इसका मतलब तो यह हुआ कि बम्बई के पते पर सत्यदेव के यहां जाना भी बेकार होगा।'

'मैंने यह नहीं कहा कि छानबीन ही न की जाये।' बलजीत बोला, 'मेरा कहना है कि पहले पत्र पर तारदेव रोड के एक बंगले का पता बोगस है। मेरे विचार में वहां सत्यदेव नामक कोई आदमी नहीं रहता।'

ठीक इसी क्षण दबी-दबी चीख सुनाई दी। सभी चौंक पड़े।

'कपिला...यह कपिला की चीख है।' यह कह कर सेठ रघुनन्दन अपनी बेटियों के बैडरूम की ओर लपके।

बाकी लोग भी उसके पीछे हो लिये।



चपला अपने पलंग पर हैरान बैठी थी। कपिला पलंग के पास मुँह खोले खड़ी थी। पलंग के पास गलीचे पर एक सूटकेस था। उसके पास मर्दाना कपड़े पड़े थे जो सूटकेस में से निकाले गए थे।

'यह...यह सूटकेस हमारा नहीं है।' कपिला ने अपने पिता से कहा जो हांप रहे थे।

इन्स्पेक्टर भी हैरान होकर बोला, 'कपड़ों से तो यह मर्दाना सूटकेस लगता है।'

सेठ रघुनन्दन बोले, 'सूटकेस मेरा भी नहीं है। ये लिबास मेरे नहीं हैं। मैं ऐसे कपड़े नहीं पहनता।' और वह कपिला की ओर घूम कर बोले, 'कपिला ! तुम इस तरह क्यों खड़ी हो ?'

'डैडी ! इस सूटकेस में कपड़ों के नीचे भयानक चीजें पड़ी हैं। मैंने रात का लिबास पहनने के लिए पलंग के नीचे से अपना सूट-केस निकालना चाहा तो मेरा हाथ इस सूट-केस पर जा पड़ा। यह मेरे सूटकेस के ऊपर पड़ा था।' कपिला ने अपनी हैरानी का कारण बताया।

अब बलजीत आगे बढ़ा। उसने सूटकेस में से कपड़े निकाल दिये। इसके बाद एक-एक चीज बाहर निकालने लगा। इन्हीं चीजों को देख कर कपिला की चीख निकल गई थी।

बलजीत ने सबसे पहले कांसे का नेवला निकाला था। उसकी कमर के गिर्द फणधर सांप लिपटा हुआ था। नेवले ने सांप की गर्दन मुँह में ले रखी थी।

इसके बाद सूटकेस में से एक मूर्ति निकली। यह मूर्ति एक बुढ़िया की थी। वास्तव में वह कोई चुड़ैल बुढ़िया थी। उसके माथे में तीसरी आंख बनी हुई थी। बुढ़िया के दाँत इतने लम्बे थे कि राक्षसी की तरह मुँह से बाहर निकले हुए थे। उसके पांव उल्टे थे। एड़ियां आगे को थीं और पंजे पीछे को थे।

बलजीत ने जो तीसरी चीज निकाली, वह भूरी लकड़ी की मूर्ति में एक मर्द और एक औरत दिखाई गई थी। मर्द के हाथ में छुरा था और वह छुरा औरत के नंगे पेट में आधा धंसा हुआ था।

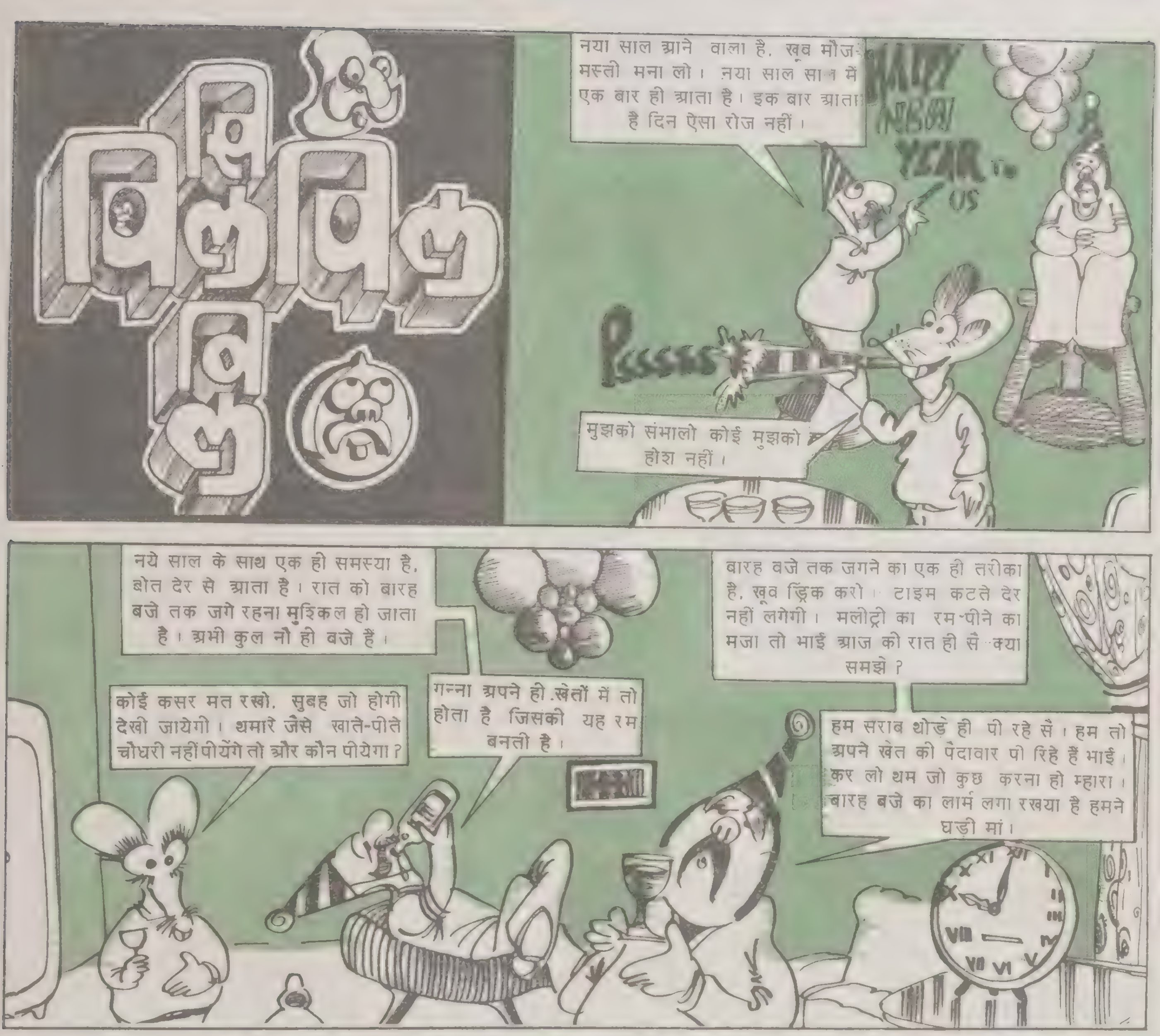
'ये कैसे खिलौने हैं ?' इन्स्पेक्टर ने हैरान होकर कहा।

'ये खिलौने नहीं हो सकते।' बलजीत बोला, 'ऐसे भयानक खिलौने कोई नहीं बनाता। खिलौने तो बच्चों का मन बहलाने के लिए होते हैं। ऐसे खिलौनों से बच्चों को दूर ही से डर लगने लगेगा। यहां तक कि इन्हें कोई बेचने के लिए भी तैयार नहीं होगा। इनके पीछे भी कोई गहरा भेद मालूम होता है।'

हर कोई बलजीत की दलील से सहमत था।

बलजीत ने कहा, 'अगर ये खिलौने मृतक ने बनाए थे तो प्रश्न उठता है कि उसने ऐसे-ऐसे खिलौने क्यों बनाए ? यह मृतक कौन

शेष पृष्ठ ३८ पर



नया साल आने वाला है, खूब मौज मस्ती मना लो। नया साल साल में एक बार ही आता है। इक बार आता है दिन ऐसा रोज नहीं।
HAPPY NEW YEAR TO US
Psssss
मुझको संभालो कोई मुझको होश नहीं।
नये साल के साथ एक ही समस्या है, बोत देर से आता है। रात को बारह बजे तक जगे रहना मुश्किल हो जाता है। अभी कुल नौ ही बजे हैं।
बारह बजे तक जगने का एक ही तरीका है, खूब ड्रिंक करो। टाइम कटते देर नहीं लगेगी। मलोट्री का रम-पीने का मजा तो भाई आज की रात ही से क्या समझे?
कोई कसर मत रखो, सुबह जो होगी देखी जायेगी। थमारे जैसे खाते-पीते चौधरी नहीं पीयेंगे तो और कौन पीयेगा?
गन्ना अपने ही खेतों में तो होता है जिसकी यह रम बनती है।
हम सराब थोड़े ही पी रहे सैं। हम तो अपने खेत की पैदावार पी रिहे हैं भाई। कर लो थम जो कुछ करना हो म्हारा। बारह बजे का लार्म लगा रखया है हमने घड़ी मां।
नतीजा जैसे कि सबको पता है जो होना है वही होता है ज्यादा शराब पीने के कारण लगभग ग्यारह बजे ही तीनों लुढ़क जाते हैं। उन्हें कुछ होश नहीं रहता।
HAPPY NEW YEAR
उधर गली में से मशहूर चोर चम्पत लाल सेंधमार गल घोटिया आ निकलता है। खिड़की से झाक कर अन्दर देखता है तो उसे अन्दर का सारा मामला समझ में आ जाता है। शराब की खाली बोतलें बिखरी पड़ी थीं। साफ मतलब था कि नशे में धुत्त होकर तीनों औंधे पड़े हैं। उसके लिये यह सुनहरा मौका था।
चल जा अन्दर में, कोई न मन्दर में चम्पत लाल और दिखा अपने हाथ।



चम्पत लाल खिड़की के रास्ते सरक कर अन्दर घुस जाता है।
वाह ! चारों तरफ शराब की बदबू फैली है। कोई और तो नहीं है मकान में ? लगता तो नहीं।
यह हल्के नशे में तो नहीं हैं ? खटका सुन कर आंख खुल गयीं तो ? पहले देख लेना चाहिये। मैं जोर-जोर से शोले के डायलॉग बोलता हूं। कच्ची नींद में होंगे तो जाग जायेंगे। मैं कह दूंगा नये वर्ष की बधाई देने आया हूँ।
क्यों रे कालिया, यह हैं वह दो फौज्जी जो रामगढ़ की रक्सा के लिए आये हैं ?
हूं हूं हूं..... हा हा हा हा हा हा-हूं......
किसी ने करवट तक नहीं बदली। आज शायद मेरी किस्मत का वॉल्टेज ज्यादा ही तेज है। इसी खुशी में मैं भी एक जाम पी लेता हूं। जयप्रकाश जी ने भी कहा है कि थोड़ा पीने में बुराई नहीं है हं हं हं इनको जरा डंडे मार कर देखूं ? उठते हैं कि नहीं। डंडे से भी होश न आयी तो टैम्पू लेकर आऊंगा और सारा माल फर्नीचर समेत उठा कर ले जाऊंगा।
अरे ? इस पर तो डंडों का भी असर नहीं होता। फ्लैग ब्रांड चावल की बोरी की माफिक है यह तो। पहले मैं कीमती सामान समेट लेता हूं। दूसरे फेरे में टैम्पू में भारी सामान ले जाऊंगा।
BA
परी से वह तो परी कैसे कमर मटका कर चलती है वह जो है न !
और कुछ रह तो नहीं गया ? इसकी जेबें भी टटोल ली मैंने. पांच सौ अस्सी रुपये नब्बे पैसे मिले। रेडियो और टेपरिकार्डर संभाल लिया है, ट्रांजिस्टर भी रख दिया। इलेक्ट्रिक कैलकुलेटर भी समेट लिया। जितने स्टील के बर्तन और अच्छे-अच्छे कपड़े थे वह भी रख दिया है। मेरा ख्याल है इस फेरे के लिये यह काफी है। अब टैम्पू लेकर आऊंगा और फ्रिज, आलमारी, सोफा सेट, पलंग, डाइनिंग टेबल, कुर्सियां, पर्दे, सीलिंग फैन, बाल्टियां वगैरह सब ले जाऊंगा। जब इनको होश आयेगा तो पानी पीने के लिये गिलास तक नहीं मिलेगा, हा-हा-हा।


तभी १२ बजे का अलार्म बजा उठता है।
एलार्म क्यों बाजा···सोने दे आड़ी बोत क्या नाम नींद आ री से हैं सुबह हो गयी···क्यूं हो गई···अच्छा-अच्छा बोत अच्छा है···बोत अच्छा है···सुबह हो गई वह सुबह कभी तो आयेगी···जरूर आयेगी, जरूर आयेगी थम देखते रैना आधी रात में सबेरा कैशे हो गया···हो गया।
क्या बाजा था इभी-इभी···कुछ बाजा था···हां लार्म बाजा था। क्यूं बाजा था···लार्म का काम बाजना से हौर वह बाज गया। इब थम बताओ हम क्या कर सकते हैं···बोल्लो···हम क्या कर सकते हैं। लेकिन सवाल से क्यों बाजा म्हारी इजाजत के बगैर ?
मेरे दमाग में धूल सी उड़ रही है। ठीक-ठीक समझ में नीं आ रिया है···नीं आ रिया है···सवेरा कैसे हो गया···ये सामने कौन खड़्या से कौन खड़्या से
कौन से तू ? म्हारी जाजत के बगैर म्हारे मकान में कैशे घुस गया ? मैं बोत खराब आदमी हूं मैंने बड़े-बड़े सीधे कर दिये हैं··· तू बोलता क्यों नहीं···चुप्प खड़्या से···सरमाता है ? अपने बड़े भाई से सरमाता है ? ओये देख मैं तेरा बड़ा भाई हमेशा तुझे मैंने अपना छोटा भाई समझया है···अपने सगे से भी बढ़ कर। हांऽऽऽ तू मुझे क्या सिखाता है ? तू खुश तो है न···मैं तेरे से बोत खुस हूं. बोत खुस तू मेरा छोटा भाई बोत सीधा आदमी है। पगले दुनिया ठग लेगी तुझे मैं बोत खुस हूं तेरे से बोत खुस।
अच्छा छोटे भाई···टैम क्या हुआ है ? टैम···टैम की ऐसी-तैसी···आज तारीख क्या है बोल ? तुझे बोलना पड़ेगा वर्ना मुझे गुस्सा आयेगा।
आज पहली जनवरी की सुबह है बड़े भाई जी।
पहली जरनवी है ठीक है, पहली जवनरी···बोत ठीक है। पहली जरनवी को कोई आने वाला था। कौन आने वाला था। मुझे न मालूम मुझे न मालूम कैसे बताऊं बिताई कैसे रतियां मैंने साजन के साथ होऽऽऽऽ।
पागल हो गया है।
अरे पहली जनवरी से आज। इब मुझे जाद आ रिया है कि कौन आने वाला था आज। आज कुछ नया आने वाला था···नया बिल्कुल एकदम नया जैसे फैक्ट्री से निकला हुआ है। क्या आने वाला था···बिल्कुल नया···क्या···हां···नया तो होगा···क्या होगा अरे-अरे नया साल, याद आया अब नया साल।
न्यू इयर !



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

बन्द करो बकवास


क्या से क्या हो गया बेवफा तेरे प्यार में।
बन्द करो बकवास, ड्राई डे के दिन बार्डर पर बोतलें ले जाना चाहते हो।
कह दो कोई ना करे यहां प्यार।
बन्द करो बकवास, जजमान अगर तुम नहीं चाहते कि मन्दिर के बगीचे में प्रेमी बैठा करें तो नोटिस लगा दो। रोज शाम को यह गाना गाने की जरूरत नहीं।
अगर मुझसे मुहब्बत है मुझे सब अपने गम दे दो।
बन्द करो बकवास, मैं आगे ही परेशान हूं। गम चाहिएं तो मेरी सास को ले जाओ अपने साथ।

आपके पत्र

दीवाना का अंक ४६ मिला । यह बहुत ही मजेदार अंक है । फिल्मी इंटरव्यू लाजवाब था । छुट्टन और मिट्ठन हास्य से परिपूर्ण थे । काश ये हमें सुपरमेनों के भेष में नजर आते । कार्टून बना कर आपने नेताओं की विशेषताएं बतायीं । मदहोश बहुत ही लाजवाब था । दीवाना की पृष्ठ संख्या बढ़ाएं ।

अमिन जमादार—(गोवंडी) बम्बई

मैं दीवाना का जब से नियमित पाठक हूं जब इसकी कीमत मात्र ३० पैसे थी । यह कहना भी गलत न होगा कि इस समय तो क्या पिछले १० वर्षों से दीवाना के मुकाबले कोई हास्य व्यंग्य की साप्ताहिक तो क्या कोई मासिक पत्रिका भी नहीं है । परोपकारी, पिलपिल-सिलबिल, मोटू-पतलू, मदहोश, छुट्टन-मिट्ठन, फैण्टम, चिल्ली-लीला तो खासकर पाठक को दीवाना बना ही देती है पर क्यों और कैसे, खेल-खेल में, चाचा बातूनी स्तम्भ आज हर व्यक्ति को अपनी ज्ञान वृद्धि के लिए पढ़ना परम आवश्यक है ।

टी० एस० साहनी—दिल्ली

दीवाना की मनोरंजक और हास्यप्रद सामग्री का जवाब नहीं । दीवाना की हास्य प्रसिद्धि को देखते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है । यह पत्रिका हास्य सामग्री में सर्वश्रेष्ठ है ।

अभी मैंने दीवाना का ४५ वां अंक पढ़ा । यह अंक भी विशेष रूप से सराहनीय है । खासकर मुझे काका के कारतूस, आपस की बातें, खेल-खेल में और क्यों और कैसे बहुत मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक लगती हैं । अगर आप काका के कारतूस स्तम्भ में सर्वश्रेष्ठ प्रश्न पर इनाम रख दें तो दीवाना हीरे की तरह जगमगाता रहेगा ।

चिन्ताराम गिरि 'राजा'—दुलियाजान

दीवाना अंक ४८ मिला और बहुत पसन्द आया । कहना नहीं पड़ेगा कि पहले की तरह यह अंक आकर्षक था । मैं दीवाना ७ वर्ष से नियमित रूप से पढ़ रहा हूं । इस अंक में मोटू-पतलू, काका के कारतूस, चिल्ली लीला आदि बहुत मजेदार थे । क्यों और कैसे नामक स्तम्भ बहुत ही ज्ञानवर्द्धक है । कृपया अर्थ-अनर्थ, जैसा बोर स्तम्भ बन्द कर दें । और इस बार की कहानियां बहुत पसन्द आईं ।

के. के. अरोरा (कंचन)—दिल्ली

अंक नं० ४६ प्राप्त हुआ । इसके प्राप्त करने के लिए हमें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा । कारण यह है कि प्रत्येक सप्ताह दीवाना हमारे लिए उतना ही आवश्यक है जितना खाना । दीवाना एक हास्य-व्यंग का ऐसा भण्डार है जिसे पढ़ने के बाद कैसा भी दुख हो फिलहाल के लिए दूर हो जाता है । इस अंक में डा० झटका का 'प्लास्टिक सर्जरी' बड़ा ही मजेदार रहा, वैसे फिल्म इटरव्यू, काका के कारतूस, चिल्ली लीला ने तो दीवाना में चार चाँद लगा दिये । हमारी तरफ से दीवाना (चिल्ली) को लाख-लाख सलाम ।

इसराईल बी० कोम०—ऐनास्लामपुर

दीवाना का अंक ४७ मिलने से एक दिन पहले मुझे बुखार था परन्तु जब मेरा भाई यह अंक घर में लेकर आया तब सच मानिए मेरा आधा बुखार मुख पृष्ठ को देख कर ही उतर गया और इस अंक में मुझे फिल्म जगत के जीव-जन्तुओं से आपका एक परिचय बहुत अच्छा लगा । वैसे तो चिल्ली लीला, दीवानी-चिपकी, मोटू-पतलू, छुट्टन और मिट्ठन, भी काफी अच्छे लगे ।

पीताम्बर—उल्हासनगर

दीवाना का १ दिसम्बर का अंक नं० ४७ पढ़ा । मुख पृष्ठ पर वीर सेनानी अर्थात् चिल्ली को गुलेल से बम छोड़ते देखा तो बहुत हंसी आई । अन्दर के पृष्ठों में चिल्ली के निर्देशन में बनी फिल्म 'मोटम-पतलम चेलाराम' पढ़ी । वाकई फिल्म अच्छी थी । मुझे तो आशा है सिल्वर जुबली मनाएगी । पिलपिल का सपना लाजवाब था । धारावाहिक उपन्यास 'आखरी चीख' अच्छी चल रही है । दीवाना फीचर 'फिल्म जगत के जीव जन्तुओं से आपका परिचय' जब पढ़ा तो हंसा-हंसा कर पेट में दर्द कर दिया बाकी सभी स्थायी स्तम्भ मजेदार एवं मनोरंजक लगे ।

डी० के० मटाई—इन्दौर

हास्य-रस से सराबोर दीवाना का अंक नं० ४७ प्राप्त हुआ । मुख पृष्ठ से लेकर अन्तिम पृष्ठ तक सारी सामग्री रोचक व हास्यपूर्ण थी । मुख पृष्ठ देख कर ही कहकहे लगाने को जी चाहता था । 'दीवानी चिपकी' 'फिल्म जगत के जीव जन्तुओं से आपका परिचय' 'सर्दियों का दीवाना मतलब' 'पिलपिल सिलबिल' और 'मोटू-पतलू' लुभावने फीचर थे । कृपया 'मनोरंजन स्ट्रीट' जैसा रुचिकर स्तम्भ फिर से आरम्भ कर दें और 'शब्दों की हेरा फेरी' भी प्रकाशित किया करें ।

हरीश कुमार 'अमित',—सिरसा

दीवाना का नया अंक मिला । मुख पृष्ठ बहुत ही सुन्दर लगा । इस अंक में मोटू-पतलू, मदहोश, सिलबिल-पिलपिल और दीवाना पंचतंत्र बहुत ही रोचक रहे । आशा है कि दीवाना पत्रिका इसी तरह प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहेगी व इसी प्रकार यह पत्रिका भविष्य में हमारा मनोरंजन कराती रहेगी । दीवाना के सभी कलाकारों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई ।

निरभै सिंह—मोगा

'बुनाई विशेषांक' कई पत्रिकाएं निकाल रही हैं जिनमें बहुत विस्तार से स्वेटर बुनने के सिरदर्दी वाले तरीके बताये जाते हैं पर अंक ४८ में श्री चिल्ली की धर्मपत्नी लिल्ली ने मुख पृष्ठ पर आकर बुनाई का जो तरीका दिखाया वह तो सब बुनाई विशेषांकों को मात दे गया, बधाई ।

'दीवाना पंचतंत्र' को हमारे बुजुर्ग लोग बहुत पसन्द करते हैं तो 'मोटू-पतलू', 'छुट्टन और मिट्ठन' और 'पिलपिल-सिलबिल' हमारे बच्चों और छोटे भाई बहनों का अत्यधिक मनोरंजन करता सिद्ध हुआ है और युवा वर्ग में ज्ञानवर्धक स्तम्भ 'क्यों और कैसे', 'खेल-खेल में' 'मदहोश' व फिल्मी स्तम्भ काफी लोकप्रिय हैं । कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है कि अब दीवाना हर आयु वर्ग में काफी पसन्द की जा रही है ।

साहनी—दिल्ली

अंक ४८ मिला, प्रथम पृष्ठ पर जो चिल्ली महोदय ने बुनाई का एक नया नमूना पेश किया है वह तो वाकई तारीफ के काबिल है । बाकी सभी स्तम्भ रोचक रहे । मेरा आपसे अनुरोध है कि जनवरी का प्रथम अंक 'नववर्ष विशेषांक' जारी करें जो कि सभी दीवाने भाइयों को नये साल की बधाई प्रदान करे ।

गनेश मित्तल 'हलवाई'—गाजियाबाद

मोटू-पतलू की रहस्य कथा

मौत का घंटा

पिछले दिनों बेला अपने मंगेतर हरीश से मिलने मद्रास पहुंची तो चेलाराम उसके साथ था। वहां समुद्र के किनारे घूमते हुए उन्होंने एक मन्दिर की चोटी से एक बड़ा घंटा और उसके साथ एक आदमी समुद्र में गिरते देखा। तीन तैराकों ने जब आदमी को बाहर निकाला तो बेला को पता चला कि वह उसका मंगेतर हरीश है। हरीश की मृत्यु हो चुकी थी और उसे समुद्र से निकालने वालों में एक उसकी मौसी का लड़का गणेश था।

कुछ दिन पहले पुलिस को एक पत्र मिला था, जिसमें हरीश ने लिखा था कि वह जीवन से तंग आकर आत्महत्या कर रहा है। इस पत्र के बारे में हरीश का कहना था कि वह जाली है।

हरीश का इम्पोर्ट एक्सपोर्ट का बिजनेस था, केरल में उसके नाना के काजू के बड़े-बड़े बाग थे। मद्रास में भारी सम्पत्ति थी और यह सारी सम्पत्ति हरीश को मिलने वाली थी। पर नाना की एक वसीयत के अनुसार यह सम्पत्ति हरीश को तभी मिलती, जब वह बेला से विवाह करता। ऐसा न हो सकने पर वसीयत में लिखा था कि इस सम्पत्ति के लिए एक ट्रस्ट बना दिया जाए जिसकी चेयरमैन बेला होगी।

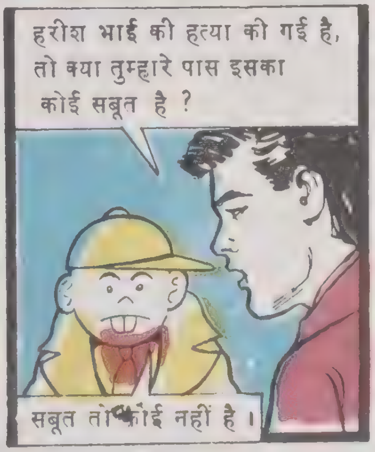
हरीश के बदन पर गोली लगने का या किसी और प्रकार का घाव नहीं पाया गया था। पोस्ट मार्टम करने पर उसके मेदे में से किसी प्रकार का जहर नहीं मिला था। बेला हरीश से विवाह करना नहीं चाहती थी। उसे रुपये का मोह नहीं था। हरीश के समुद्र में डूब कर मरने को आत्महत्या माना गया और इसका कारण माना गया बेला का विवाह से इनकार और इस इनकार से हरीश को लाखों रुपये की सम्पत्ति न मिलने की सम्भावना।

चेलाराम इस केस की गुत्थी को सुलझा रहा है और उसके साथ ही हरीश की कोठी पर ठहरे हुए हैं, बेला, उसकी मम्मी, मोटू-पतलू और घसीटा राम...! और इस समय बेला की सहायता के लिए वहां उपस्थित है, हरीश की मौसी का लड़का गणेश।

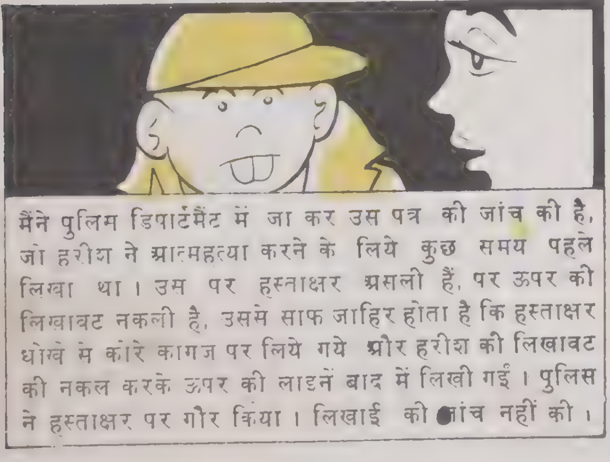













यह तो मैं नहीं कह रहा हूं ।
देखो बेला, मैं विवाह का प्रस्ताव लेकर आया था, बहस करने नहीं । हरीश की मृत्यु का कारण अगर रुपया है तो वह अब मेरे पास नहीं, तुम्हारे पास आ रहा है ।
और उस रुपये को आना चाहिये तुम्हारे पास ।
यानि अगली हत्या बेला की होगी ? कहो तो आत्महत्या का एक पत्र बेला से लिखवा कर अभी से तुम्हें दे दूं ?
एक पत्र तुम भी लिख दो, अच्छा है । बस इतना याद रखना कि किसी की गर्दन पर हाथ डालने से पहले अपनी गर्दन छू कर देख लेना ।
मैं दावे से कह सकता हूं कि हरीश की हत्या उसके रिश्ते के भाई गणेश ने की ।
पर इसका सबूत तो नहीं है कोई ।
मेरा विचार है सबसे पहले उस मन्दिर के पुजारी से बात करो, जहां से घंटा गिरा था ।
मन्दिर के पुजारी ने उन्हें बताया...
मुझे इतना पता है कि हरीश बाबू ज्ञान-ध्यान में विश्वास रखते थे, नियमित रूप से मन्दिर आते थे और सबसे ऊपर जा कर घंटा बजाते थे । घंटे की जंजीर ऊपर से क्रैक हो रही थी और उसकी मरम्मत के लिये हमने कई बार मिस्त्री बुलवाया था ।
एक बात और है जी । आज से दो सौ साल पहले इसी प्रकार यह घंटा मन्दिर से गिरा था । इसके साथ एक आदमी भी लपेट में आ गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी, ठीक इसी तरह ।
इसे भगवान की लीला कहो, या कुछ और । जब वह घंटा समुद्र से निकाला गया, तो उस पर हत्यारे का नाम अंकित था ।
क्या यह बात सच्ची है ?
सच्ची ही नहीं है, इसे यहां का बच्चा-बच्चा जानता है । भगवान की इस महिमा की याद में हम यहां हर साल एक उत्सव मनाते हैं ।
भगवान की दिखाई न देने वाली आंखें सब कुछ देखती हैं, भगवान को हत्यारे का पता था । उसने घंटे पर हत्यारे का नाम अंकित कर दिया और हत्यारा पकड़ा गया ।

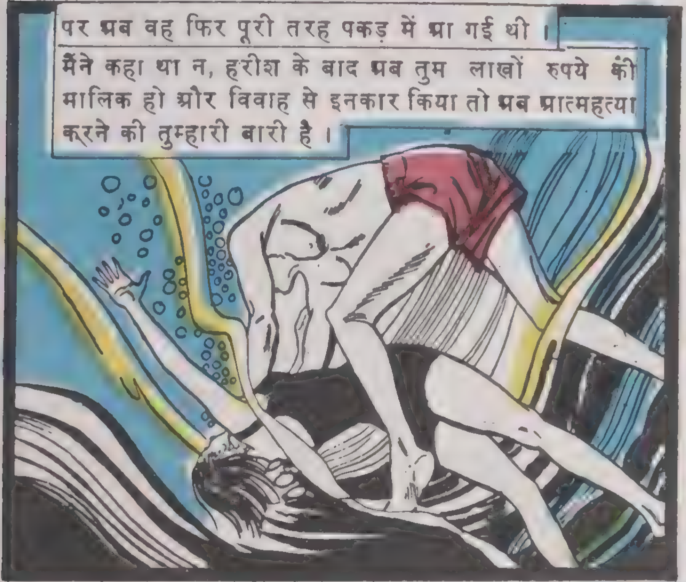


तो फिर दो सौ साल वाला भगवान आज भी तो है। आज भी उसने घंटे पर हरीश के हत्यारे का नाम अंकित कर दिया होगा।
वंडरफुल आइडिया! जो काम किसी से नहीं हुआ वह भगवान ने कर दिया। समुद्र से घंटा निकाल कर देखो। उस पर किसका नाम खुदा हुआ है।
दो सौ साल पहले की कहानी को पक्के विश्वास के साथ चेलाराम ने बेला के पास आ कर दोहराया।
पुजारी ने कहा है, और यहां का बच्चा-बच्चा जानता है कि दो सौ साल पहले इसी तरह मन्दिर का यह घंटा समुद्र में गिरा था। इसके साथ ही एक आदमी की हत्या करके उसके मृतक शरीर को घंटे के साथ फेंका गया था।
और यह भगवान की लीला है कि जब यह घंटा समुद्र से निकाला गया, तो इस पर हत्यारे का नाम अंकित था।
यह कहानी तो वास्तव में बिल्कुल सच्ची है।
अब हरीश के हत्यारे का नाम भी घंटे पर अंकित हो गया होगा। पुलिस ने क्रेन मंगवाई है। कल शाम तक समुद्र से घंटा निकालने का काम शुरू हो जाएगा।
कहते हैं दीवारों के भी कान होते हैं पर यहां तो यह बात दो असली कानों ने भी सुन ली थी, जो साया बन कर दीवार के साथ लगे थे। और बेला सोच रही थी।
कल शाम को घंटा समुद्र से निकाला जाएगा। कल शाम तक कौन इन्तजार करेगा?
हत्यारे का नाम तुरन्त जानने के लिये बेला व्याकुल हो उठी।
और समुद्र में गोता लगाने के लिये उसी शाम स्वीमिंग सूट पहन कर समुद्र के किनारे पहुंच गई।


ग्रौर उसने समुद्र में छलांग लगा दी। इससे पहले की कल पुलिस क्रेन से घटे को बाहर निकाले वह इस पर अंकित हत्यारे का नाम जानना चाहती थी।
उसे घटा गिरने का सही स्थान मालूम था, इसलिए समुद्र की तह में घटा ढूंढने में उसे ग्रधिक देर नहीं लगी।
पर इस समय समुद्र में गोता लगाने वाली वह ग्रकेली नहीं
घटे पर अंकित नाम बेला के लिये केवल महत्वपूर्ण था, पर किसी ग्रौर के लिए जीवन ग्रौर मौत का सवाल था।
देखूं कहां ग्रंकित है हत्यारे का नाम।
दो हाथ उसके पीछे लगे हैं, यह उसे पता नहीं था।
ग्रचानक उसने ग्रपने गले पर किसी की उंगलियों का दबाव महसूस किया।









यह छेनी और हथौड़ा साथ है, क्या मछलियां पकड़ने के लिये ? गणेश ने सोचा, मैंने हरीश की हत्या की है, तो घंटे पर भगवान ने मेरा नाम अंकित कर दिया होगा । जब तक पुलिस क्रेन से घटे को समुद्र से बाहर निकाले, क्यों न मैं छेनी हथौड़े से अपना नाम मिटा कर किसी और का नाम अंकित कर दूं ।

दो सौ साल पहले वाली कहानी पर मैंने इसीलिए बल दिया था कि जैसे चोर की दाढ़ी में तिनके वाली बात है, असल हत्यारा घटे पर से अपना नाम मिटाने के लिये अवश्य समुद्र में डुबकी लगायेगा । पुलिस इन्स्पेक्टर को यह बात समझा कर मैं पहले ही पुलिस पार्टी के साथ समुद्र तट पर छुपा हुआ था । यहां गणेश को बेला भी मिल गई तो इसने सोचा विवाह से इनकार करने वाला शिकार कितनी आसानी से हाथ आ गया है । गला घोंट कर मार दो तो लोग इसे भी आत्महत्या का केस समझेंगे, पानी में तो गले पर उंगलियों के निशान भी नहीं पड़ेंगे ।

मैंने इस केस की पूरी छानबीन कर ली है । हरीश की हत्या में जिन दो आदमियों ने गणेश का साथ दिया वह मैंने पहले ही पकड़वा दिये हैं । गणेश के यह दो साथी थे जिन्होंने समुद्र में गोता लगा कर डूबे हुए हरीश को निकाला था ।





ग्रागामी ग्रंक में इन कलाकारों का एक ग्रौर फड़कता हुग्रा कारनामा देखिये ।

छुट्टन और मिट्ठन का शुभचिंतक

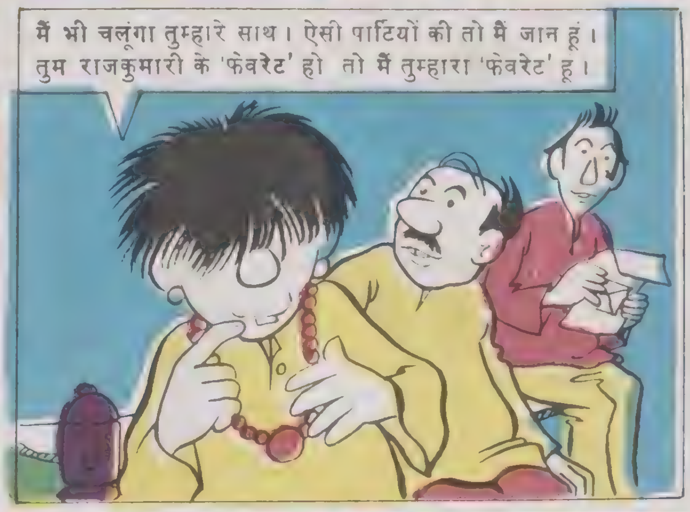
बच्चा झमूरा

आइए, तालियां बजाइए ! एक और धांसू कलाकार आपको महफिल में हाजिर है । इसका नाम है, बच्चा झमूरा । यह किस मिट्टी से बना है, यह तो आप ही बतायेंगे । बच्चा झमूरा हर आदमी का शुभ चिंतक है । यह अलग बात है कि झमूरा जिसके सर की खैर मनाता है, उसका सर फूटने में अधिक देर नहीं लगती । बच्चा झमूरा आपकी हर बात मानने को तैयार है, पर एक बात अपनी भी मनवाना चाहता है कि भगवान ने जितनी अक्ल इसे दी है उतनी किसी को नहीं दी ।

बच्चा झमूरा अभी-अभी छुट्टन और मिट्ठन के पड़ोस में आ कर बसा है । क्या आप इन दोनों की सलामति के लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे ?









पार्टी में पहुंचे तो राजकुमारी वन्दना ने सबसे छुट्टन और मिट्ठन का परिचय कराया । दीवाना के पृष्ठों पर देखकर सभी इनसे मिलने के इच्छुक थे, और सबकी नजरों में इनकी बहुत इज्जत थी । एक प्रकार से यह राजकुमारी की पार्टी के चीफ गेस्ट बन गये थे । उधर बच्चा झमूरा को आईसक्रीम की प्लेट साफ करने से फुर्सत नहीं थी । वह छुट्टन और मिट्ठन के साथ था इसलिये पार्टी में उसका भी उतना ही सम्मान किया गया था । वह जाते-जाते वेटर को पकड़ कर जिस प्लेट पर चाहता था हाथ साफ कर जाता था ।





बच्चा झमूरा फिर एक नया हंगामा लेकर आ रहा है, दीवाना के आगामी अंक में।

ओम प्रकाश बवेजा—फरीदाबाद

प्र० : गिल्ली-डंडे का आविष्कार सबसे पहले किस देश में हुआ। क्या इसके कोई ओलम्पिक टैस्ट हुए हैं ?

उ० : गिल्ली-डंडा जैसे कि नाम से स्पष्ट है भारत की ही देन है। इसे भारतीय क्रिकेट समझना चाहिए। दोनों खेलों की कई बातें मिलती हैं।इसका ओलम्पिक टैस्ट तो क्या भारत में भी विधिवत मैच आयोजित नहीं हुआ है। यह खेल बच्चों तक ही सीमित है।

सुखचरन सिंह बेदी—कलकत्ता

प्र० : लाला अमरनाथ ने कितने टैस्ट खेले हैं तथा कितने रन बनाये ?

उ० : २४ टैस्ट ८७८ रन तथा एक शतक।

फरीद अहमद—मुरादाबाद

प्र० : न्यूजीलेंड के बेवन कांगडन तथा वेस्ट इंडीज के कालीचरण का पूरा टैस्ट रिकार्ड बताइये तथा यह भी बतायें कि इन की औसत क्या है ?

उ० : बेवन कांगडन ने ५५ टैस्टों में ३२८५ रन बनाये हैं, सात शतक बनाये इसके अतिरिक्त ३३.५४ रनों की औसत पर ५७ विकेट लिये हैं। कालीचरण ने ४० टैस्टों में २९२३ रन बनाये हैं ८ शतक मारे हैं।

जसवन्त सिंह नारंग—मंदसौर

प्र० : इंग्लैंड के क्रिकेट खिलाड़ी टानीग्रेग की ऊंचाई कितने फुट है ?

उ० : ६ फुट सात इंच।

भवंर लाल आचार्य—कलकत्ता

प्र० : नवाब पटौदी का टैस्ट रिकार्ड क्या है ?

उ० : ४२ टैस्टों में पटौदी ने २६९९ रन बनाये हैं उच्चतम स्कोर २०३ रन नॉट आउट।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी—बिक्रम गंज

प्र० : अब की ओलम्पिक के लिये भारत की तैयारी कैसी है, क्या कुछ आशा की जा सकती है ?

उ० : अब तक तो कोई तैयारी नजर नहीं आती। आशायें भी कम ही हैं,उससे

खेल खेल में

पहले तो विश्व हॉकी कप (१९७८) की तैयारी ही खटाई में पड़ी हुई है।

कु० रानी थारवानी—कटनी

प्र० : 'क्यू' शब्द किस खेल से संबंधित है ?

उ० : बिलियर्ड।

सुरेश चीटू—मलोट (पंजाब)

प्र० : किरमानी का हाई स्कोर क्या है और उसने अपने जीवन में कितने कैच किये है ?



उ० : किरमानी ने उच्चतम स्कोर ८८ रन बनाये हैं व २७ कैच लिये हैं।

याद. के. सुगन्ध—रिवाड़ी

प्र० : विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी (फुटबाल का) पेले ने कितने गोल विपक्षी टीमों को ठोके हैं ?

उ० : पेले ने प्रथम श्रेणी मैचों में १२७७ गोल ठोके हैं।

वीर शंकर पमनानी—मधुबनी

प्र० : रन लेने के लिये दौड़ते समय यदि बल्लेबाज विकेट पर गिर पड़े या टकरा जाये तो वह आउट कर दिया जाता है या नहीं ?

उ० : हिट विकेट आउट होगा। यदि बैटसमैन की टोपी भी झटके से गिरकर विकेट गिरा देती है तो वह आउट माना जाता है।

मनोहर गुरनानी—मेरठ

प्र० : विश्व क्रिकेट में सर्वश्रेष्ठ विकेट कीपर कौन है और उसने अब तक कितने स्टम्प लिये हैं या कितने खिलाड़ियों को स्टम्प आउट किया है ?

उ० : इंग्लेंड के एलेन नॉट। उन्होंने ८४ टैस्टों में २२१ कैच लिये व १९ स्टम्प किये।

भूपेश पाण्डे—मंदसौर

प्र० : प्रसिद्ध कुश्ती चैम्पियन दारासिंह व रणधावा ने क्या कुश्ती से संन्यास ले लिया है ?

उ० : दोनों ने विधिवत संन्यास नहीं लिया है। साल में एक-आध बार वे तमाशा दिखाते ही रहते हैं।

अब्दुल जबार—बीकानेर

प्र० : गावस्कर कितने सालों से क्रिकेट खेल रहा है ? अब तक कितने मैच खेल चुका है ?

उ० : गावस्कर ने टैस्ट क्रिकेट १९७१ से खेलना शुरू किया है।

गुरदीप सिंह छाबड़ा—

प्र० : विश्व में सबसे ज्यादा विकेट किसने लीं और उसका नाम क्या है, कहाँ का रहने वाला है ?

उ० : वेस्ट इंडीज के लांस गिब्ज। ३०९ विकेट ?

विरेश सक्सेना—नई दिल्ली

प्र० : ओलम्पिक भारत में कब होंगे ?

उ० : शायद कभी नहीं।

सुखचरन सिंह 'बेदी'—कलकत्ता

प्र० : विश्व में फुटबाल चैम्पियन कौन है तथा किस देश का खिलाड़ी है ?

उ० : पूर्व जर्मनी ओलम्पिक चैम्पियन है ?

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग.
नई दिल्ली-११०००२

प्रधान मंत्री



सन्देश

परिवारों से ही राष्ट्र बनता है। यदि परिवार बहुत बड़े हों और अपनी जिम्मेवारी स्वयं न सम्भाल सकते हों तो वे सुखी जीवन बिताने की आशा नहीं कर सकते। इसका सबसे बुरा असर माताओं और बच्चों पर पड़ता है। बच्चों को पूरी तरह बढ़ने का अवसर नहीं मिलता और बार-बार के गर्भ धारण से मां का स्वास्थ्य बर्बाद हो जाता है।

राष्ट्रीय प्रगति के विभिन्न क्षेत्रों में आज जो हम धन लगा रहे हैं उसका चरम उद्देश्य जीवन को हर दृष्टि से समृद्ध और खुशहाल बनाना है। परिवार कल्याण कार्यक्रम इस पूंजी निवेश का अनिवार्य अंग है। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि हमारे लोग इस कार्यक्रम के सही परीप्रेक्ष्य को समझेंगे और बिना किसी पूर्वाग्रह के इसे स्वीकार करेंगे।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि केन्द्र और राज्यों के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्रालय इस वर्ष देश भर में 15 से 31 दिसम्बर के बीच राष्ट्रीय परिवार कल्याण पखवाड़े का आयोजन कर रहे हैं। मैं कार्यक्रम में लगे सभी व्यक्तियों को अपनी शुभकामनाएं भेजता हूँ और पखवाड़े की सफलता की कामना करता हूँ।

नई दिल्ली,
30 नवम्बर, 1977

मोरारजी देसाई

डीएवीपी 77/385



फैण्टम और जाल देवता
पुराने जमाने में पूर्वी क्षेत्र के लोग मनुष्य की बलि दिया करते थे।
बाद में उन्होंने मनुष्य को पकडकर गुलाम बनाकर बेचा।
यह बुरे लोग आज भी हैं ओ पूर्वी क्षेत्र के रखवाले।
मनुष्य की बलि गुलामी क्या आज भी है?
तुम अपने आप सब जान जाओगे।
?
मनुष्य की बलि गुलामी आज भी है।
अंकल वाकर* बूढ़े मोज की बात का क्या मतलब है।
मुझे भी नहीं पता रक्स वह कहता है तुम सब जान जाओगे।
*चलते फिरते भूत का दूसरा नाम।
एक राहगीर जगल से गुजरता है।
?!
मेरा सारा पैसा ले लो मुझे मत मारो!
?!
!
तुम्हें कोई चोट तो नहीं आई राही?
धन्यवाद फैण्टम! वो चोर मेरे पैसों के लिए मुझे जान से मारना चाहता था।
पिछले ३० सालों से मैं इस रास्ते पर आ जा रहा हूं लेकिन पहले ऐसा तो कभी नहीं हुआ।
बस अब हम शहर के काफी करीब पहुंच गये हैं।



गुमनाम है कोई ? प्रतियोगिता

इनाम ३० रु०

26



आपको यह बताना है कि यह तस्वीर किस कलाकार की है? और यह क्या दीवानी बात कह रहा है?

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ८ब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-2 । हमारे कार्यालय में पहुंचने की अंतिम तिथि :— १४ जनवरी १९७८ — एक पोस्टकार्ड पर केवल एक ही हल भेजें।

क्यों और कैसे

प्र० : क्या सब व्यक्तियों की अंगुली छाप भिन्न होती है। क्या अंगुली छाप को बदला जा सकता है? प्रभु दयाल—मेरठ

उ० : चलचित्रों, नाटकों तथा पुस्तकों में अनेक बार ऐसी स्थिति के प्रसंग आते हैं जिसमें दोषी व्यक्ति किसी स्थान पर अपनी अंगुली छाप छोड़ने के कारण पकड़ा जाता है। क्योंकि अंगुली छाप के प्रमाण में धोखा तथा गलती होना असम्भव है।

यदि अपनी अंगुलियों को देखें तो उसमें रेखाओं का एक जाल सा दिखाई देता है। ये रेखाएं उभरी हुई होती हैं, और इन्हीं के द्वारा किसी वस्तु को छूने पर हम उसका अनुभव करते हैं। इन रेखाओं के नमूने से ही अंगुली छाप बनती हैं। ये नमूना संसार के हर व्यक्ति की अंगुली में भिन्न होता है। इसी कारण संसार के हर व्यक्ति की अंगुली छाप भिन्न हैं, वे किसी दूसरे व्यक्ति से कभी भी नहीं मिलतीं। अंगुली के पोरवे को यदि बार-बार भी जलाया जाए, तो भी रेखाओं का वही नमूना घाव ठीक होने पर उभरता है। हर अंगुली छाप में एक प्रकार की बातें पाई जाती हैं, एक विशेष प्रकार की बनावट हर अंगुली में होती है, परन्तु रेखाओं के नमूने हर व्यक्ति के भिन्न होते हैं।

अंगुली छाप विशेषज्ञ इन नमूनों में लगभग सौ अलग-अलग बातें निकाल लेते हैं, पर यदि हाथ की एक अंगुली की भी छाप की केवल एक विशेषता को दूसरी अंगुली की छाप से मिलाने का प्रयास किया जाये तो सौ में से कम से कम चौंसठ व्यक्तियों की अंगुली छाप का निरीक्षण आवश्यक है। ये निरीक्षण तब आवश्यक है जब हम केवल एक अंगुली की केवल एक विशेषता को मिलाने का प्रयत्न करें, जबकि हर छाप में लगभग सौ विशेषताएं होती हैं और हमारी दस अंगुलियां हैं। इसी प्रकार यदि सौ विशेषता मिलानी हों तो संसार भर के व्यक्तियों की अंगुलियां देखनी पड़ेंगी, जो कि संसार में पिछले चार करोड़ वर्षों में पैदा हुए हों, अर्थात ये काम असम्भव है।

इतने बड़े संसार में किन्हीं दो व्यक्तियों की अंगुली छाप एक सी न होना, प्रकृति का बहुत ही बड़ा अजूबा है। हर व्यक्ति की अंगुली छाप उसकी निजी ही रहती हैं जब वह जीवित रहता है।

प्र० : एक्सरे क्या है, इसका आविष्कार कब और कहां हुआ?

प्रकाश, राजू, बब्बू—मुरादाबाद

उ० : एक्सरे का आविष्कार जर्मनी में सन् १८९५ में विलहम रोन्टजन नामक व्यक्ति ने किया था। इसलिए इन किरणों अथवा रेज को रोन्टजनरेज भी कहा जाता है। ये शरीर के भीतर प्रवेश करने वाली किरणें होती हैं, वैसे ये प्रकाश किरणों के समान ही होती हैं। इन किरणों से भिन्न होती हैं एक्सरे की सबसे छोटी तरंग जो इसकी ट्यूब से निकलती हैं। प्रकाश किरण का १/१५००० तथा १/१०००,०००,००० वां हिस्सा होती है। जिन चीजों में प्रकाश किरण प्रवेश नहीं कर सकती उनमें एक्सरे आसानी से पहुंच जाती है। एक्सरे जितनी छोटी होती है उतनी ही शक्तिशाली होती है।

एक्सरे इसकी ट्यूब में तैयार होते हैं। एक्सरे की ट्यूब की वायु को जब तक बाहर पम्प किया जाता है। जब उसकी मूल वायु का १०००,०००,०००.वाँ भाग उसमें रह जाए। इस शीशे की ट्यूब में दो विद्युदग्र होते हैं। इनमें एक का ऋणात्मक प्रवाह होता है ये कैथोड कहलाता है। दूसरे विद्युदग्र को लक्ष्य या एनोड कहते हैं। विद्युदग्र कैथोड से लक्ष्य तक के भाग में बड़ी तेजी से जाते हैं, इनकी गति लगभग ६०,००० से १७५,००० मील प्रति सैकिण्ड होती है। लक्ष्य के पास पहुंच कर इन्हें अचानक रुकना पड़ता है, जिसके कारण उनकी शक्ति ऊर्जा में परिवर्तित हो जाती है। और एक्सरे एक खिड़कीनुमा स्थान से बाहर निकलती है। इन्हीं एक्सरेज द्वारा एक्सरे तस्वीर ली जाती है। जिस भाग की एक्सरे तस्वीर लेनी होती है, उसकी ओर इन किरणों को प्रवाहित किया जाता है, और ये किरणें उस भाग की छाया फिल्म पर अंकित कर देती हैं। फिर इन्हें फिल्मों की फोटो खींचने की भांति धोया जाता है। आज की चिकित्सा में एक्सरे तस्वीर का बड़ा महत्व है, इससे अनेक बीमारियों के बारे में शीघ्रता से पता लगाया जाता है।

प्र० : प्लास्टिक क्या है तथा कैसे बनता है? मोहन बुधलानी—इन्दौर

उ० : प्लास्टिक वो है जो हल्की, लचीली मजबूत, पानी और रसायनों से खराब न होने वाली तथा एक पारदर्शी चादर में परिवर्तित हो सकने तथा भिन्न-भिन्न रूपों में ढाली जा सकने वाली हो। कोई भी प्राकृतिक वस्तु इतने गुणों से भरपूर नहीं पाई जाती।

खिलौने, कपड़े, पाईप, नलों के सामान मोटरों के ढाँचे, सामान रखने के डिब्बे, बोतल इत्यादि, टाईल्स, प्लेटें तथा प्याले तो प्रतिदिन प्रयोग होने वाली कुछ ही वस्तुएं है जो प्लास्टिक द्वारा बनती हैं। प्लास्टिक ने लकड़ी, प्राकृतिक धागे, चीनी मिट्टी, कांच तथा कई प्रकार की धातुओं का स्थान बड़ी सरलता से ले लिया है। कभी-कभी तो प्लास्टिक न केवल सस्ता ही होता है अपितु दूसरी वस्तुओं से बढ़िया तथा अधिक गुणों वाला भी माना जाता है। प्लास्टिक को सरलता से भिन्न-भिन्न रूपों में ढाला जा सकता है।

कुछ प्लास्टिक प्राकृतिक होते हैं। जैसे, लाख, जो कीड़ों से प्राप्त होता है। रबर तथा गट्ट परचा हमें पेड़ों से मिलता है। परन्तु साधारणतया हम मनुष्यों द्वारा बनाई वस्तुओं को ही कहते हैं। मनुष्य द्वारा प्लास्टिक सन् १८६० में सैलुलोयड के रूप में बनाया गया। ये रुई पाए जाने वाले सैलूलोज से बनता है। इसके बाद सन् १९०९ में बैकोलाइट की खोज हुई। १९३०-४० में बढ़िया प्लास्टिक का निर्माण होने लगा। इनमें पोलिस्टरीन, पोली विनायल, क्लोराइड एक्रेलिन, नाईलोन, तथा पोलीथीन विशेष स्थान रखते हैं।

प्लास्टिक बनाने का कच्चा सामान अधिकतर कोलतार तथा पैट्रोलियम से उपलब्ध होता है। प्लास्टिक बनाने में या तो इसके पिघले मसाले को ढांचों में ढालते हैं अथवा उसे फुला कर भी ढाँचों में डाला जाता है। आज प्लास्टिक की वस्तुये हमारे जीवन में एक अत्यन्त उपयोगी स्थान प्राप्त कर चुकी हैं।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

केश: कांटों भरा ताज

इन्दु जैन

यों, हमारे बाल काले करने पर न किसी को आश्चर्य होना चाहिए था, न आपत्ति, क्योंकि बाल हमने सचमुच धूप में सफेद किए थे। बिना अनुभवों की आग में तपे, बिना उम्र का सफर तय करने की थकान झेले, हम शीश पर बेमौसम बर्फ बरसा बैठे थे। जब उत्साह की गर्माहट से बर्फ न पिघली, तो दुनिया का पैगाम सुनाने वाला समाचार पत्र हमारे शीश पर छिड़े काले-गोरे युद्ध का शान्ति-उपाय चुपके से विज्ञापन के माध्यम से सुझा गया।

बात हमने जरा बीच से उठा ली। कहानी शुरू उस सुबह से होती है, जब दर्पण में मुख निहारते हुए एक नन्हीं-सी चमक कनपटी पर कौंध गई थी और हमारा दिल उस तीखे चमकीले भाले पर टंगा रह गया था। सहम कर बालों को टटोला, लेकिन एक रुपहले तार के अलावा मेघ घटाएं ज्यों-की त्यों घिरी थीं। उस अकेले अभिमन्यु को खींचकर निकाल लिया और फूंक मार-कर उड़ाने से पहले उस पर तनिक स्नेह उमड़ आया, क्योंकि सुना था कि मां के प्यार का एक सफेद केश हरेक के सिर में हुआ करता है। थोड़ी-सी कौतूहलपूर्ण जिज्ञासा भी मन में जगी कि अब यह केश उखड़ गया, तो क्या जननी के स्नेह की छांह भी न मिलेगी? तर्कबुद्धि ने इस मूर्खता और अंधविश्वास पर ताड़ना दी और बात आई गई हो गई।

लेकिन गई नहीं, वह फिर आ गई। कुछ अरसे बाद किसी मित्र ने अपने प्रणय सम्बन्ध में सलाह मांगी और जब हमारी राय उन्हें नहीं रुची, तो झुंझला कर बोलीं, 'हम तो समझे थे कि ये सफेद बाल किसी अनुभव और बुद्धि के परिचायक होंगे, तुमने तो यों ही धूप में बाल सफेद किए।'

दिल पर भाले की फिर वही चुभन महसूस हुई। मौका मिलते ही स्नोव्हाइट कहानी वाली सौतेली मां की तरह जादुई शीशे के सामने सवाल उभरा। वह पूछा करती थी, 'सबसे सुन्दर कौन, क्या मैं?' हम पूछते थे, 'क्या हम बूढ़े?' उसे निर्दय जवाब मिलता था, 'रानी, तुम नहीं, स्नो-व्हाइट!' और हमें दिलतोड़ जवाब मिलता था, 'तुम नहीं तुम्हारे बाल!'

दिल बहलाव के लिए हमने अपनी वंशबेलि का गुण—विस्तार आरम्भ किया। आर्य मध्य एशिया से आए थे—गौरांग और पीतकेशी। बाद में अनार्यों के संसर्ग से मिश्रित जाति ने जन्म लिया। तो यह हमारा शुद्ध आर्यत्व है, जो अब हमारे शीशे पर फूट रहा है। एक-एक सफेद बाल हाथ में लिए उसे धूप में चारों ओर घुमाकर देखने की कोशिश की। शायद यह रुपहला नहीं सुनहरा है। हार कर मान जाना पड़ा कि बाल सुनहरा नहीं, धूप ही सोनरंगी है। पिता और माता की ओर किसी प्लेटिनम ब्लोण्ड पितामह और पितामही की यथा-शक्ति खोज की, जिसका रक्त और पिग्मेंट जोर मार रहा हो, लेकिन सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। मानना ही पड़ गया कि बाल सफेद होते जा रहे हैं।

खैर, खून, खांसी, खुशी की तरह यह रंज भी छुपाए न छुपा। दोस्तों और शुभ-चिंतकों के अलावा तमाम देशी-विदेशी पत्रि-काओं में सैंकड़ों नुस्खे पढ़ डाले। पढ़े ही नहीं, अजमा भी लिए। योग ने कहा शीर्षा-सन करो, सिर में रक्तसंचार होने से बालों में शक्ति आती है, गंजापन और सफेदी दूर होती है। नहीं मालूम, यह होता है या नहीं, लेकिन शीर्षासन करने के बाद कमर और गर्दन में मोच जरूर आ जाती है और वे लचकने लगती हैं, इतना मैं शर्तिया कह सकती हूं। दिसम्बर की कोहरे भरी सुबह में आंवले से सिर धोने से नजला हो गया और तब सुनने में आया कि नजला अक्सर बालों पर गिरता है। किसी दक्षिणवासी ने कहा, काफी पियो। काफी का रंग सीधे बालों पर असर करता है। तो एक कश्मीरी मित्र ने कहा, कॉफी को हाथ न लगाना। कॉफी सारा रंग सोख लेती है—बड़ी खुश्क होती है। हाल में न्यूयार्क से निकलने वाली एक मेडीकल पत्रिका में पढ़ा कि अनुसंधान द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि ज्यादा कॉफी गंजापन ले आती है। पढ़कर हमारी गति सांप छछूंदर की-सी हो गई। सिर पर बाल काले-स्याह हों, लेकिन हों कुल जमा तीन, कि नाई भी बीच की मांग निकाल कर पूछे कि तीसरा कहां रखूं? तो क्या बात बनी? दही से बाल धोए, तो बच्चे पास न फटके, मच्छर जरूर। पति दूर ही से कामकाजी बातें करके किस्सा खत्म करें। सर्दी से सिर बचाओ, लेकिन ताजी हवा बालों के जड़ों पर लगने दो। लगा कि बीरबल की तरह सिर पर खाट लिये घूमना होगा। सुबह से रात तक एक ही चर्चा, एक ही फिक्र। खाते-खाते हाथ रुक जायें, सोते-सोते चौंक कर उठ बैठें। इस सबके बीच हरदम लखटकिया सुझाव, 'भई, कुछ भी करो, चिन्ता न करो। फिक्र तो बालों का सबसे बड़ा दुश्मन है।' गर्ज यह कि मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की। एक से दो और दो से तीन, पर हम न रुके—रासायनिक खेती की तरह श्वेत क्रांति लहराती ही चली गई।

इस बीच इंगलैंड से भाई भाभी का भेजा एक प्यार भरा पार्सल दरवाजे आ लगा। पार्सल खोला, तो आंखों में खुशी के आंसू छलछला आये। मुसीबत में आखिर अपना खून ही साथ देता है। किसी संवेदन-शील मित्र ने मेरी दुविधा की गाथा सात समुन्दर पार प्रेषित कर दी थी और भैया अकुला उठा था। पार्सल में शेक्सपीयरिन भाषा में लिखित गारन्टी के साथ कई रंग की बोतलें थीं, ब्रुश थे और थीं छोटी-छोटी प्यालियां और कई पन्नों का लम्बा-चौड़ा सुझाव-साहित्य, जिसे मैंने इस तरह थामा, जैसे डूबती राजकीय ख्याति ने आर्मेडा का सहारा लिया था। सम्भल-सम्भल कर मैंने साहित्य का पारायण किया और एक-एक कदम सही चलकर, स्टॉप वॉच की मदद से अपने केश रंग डाले। घण्टों बाद जब मैं गुसलखाने से निकली, तब मेरे भीतर थकान और विजय का एक अजीब-सा मिश्रित उल्लास था। उस दिन मैंने जाना कि घमासान युद्ध के बाद सिकन्दर को कैसी अनुभूति होती होगी।

जी, इतिहास की ये उपमाएं मेरे अव-चेतन से खुद उभर कर निकली हैं और मैं अवचेतन की भाषा की बहुत कायल हूं। आज फिर एक बार उसकी सच्चाई सिद्ध हो गई। अपूर्ण भारत-विजय के बाद सिकन्दर

लौट लिया था और कलिंग-विजय के बाद चंडाशोक बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोया था—सम्राट से भिक्षु हो गया था।

मेरे सिर पर भी काले बालों का कांटों भरा ताज क्या रखा गया, मुसीबत का बादल उतर कर ठहर गया। सुबह केश-विन्यास किया और शाम को बड़ी बिटिया के स्कूल में पारितोषिक वितरण था। बड़े गर्व से हम वहां गए और बिटिया का विजयोल्लास अपने चारों ओर प्रभामण्डल की तरह लपेटे, उसके प्रिंसिपल से मिले तो वे छूटते ही बोले, 'अरे, आप इसकी माता जी हैं ? मैं तो समझा था बहन हैं !' बालों का यह चमत्कार देख हमने अपने पति पर नाज भरी दृष्टि डाली ही थी, कि पास खड़ी बिटिया की भावभंगिमा और तनी हुई मुख-मुद्रा देखकर खून जम गया। उत्साह पिघल गया। वह घर आते ही बरस पड़ी। बोली, 'तुम्हें यह तमाशा करने की क्या जरूरत थी ? बालों को क्या कर लिया है तुमने ? कितना मजाक उड़ाया होगा मेरी सहेलियों ने ! ममी तुम्हें इतना भी नहीं पता कि ग्रेसफुली बड़े कैसे होते हैं !' अपनी बेटी की यह कटु आलोचना सुनकर मैं स्तब्ध रह गई। इतनी कड़वाहट ? क्या सच ही मैंने अपना तमाशा बना लिया ? आजकल तो सभी बाल रंगते हैं। मैंने ही क्या गुनाह किया ?

पति ने मामला बिगड़ते देख हमेशा की तरह रासायनिक की भूमिका अदा की। कुछ बेटी को समझाया, कुछ बेटी की मां को, बोले, 'उसकी बात का बुरा न मानो। वह आयु की उस सन्धि पर खड़ी है, जहां मां के रूप से उसे ईर्ष्या होती है। तुमने तो मनोविज्ञान पढ़ा है। और फिर आज वह बहुत थकी हुई थी। अचानक तुम्हें बदला हुआ देखकर झुंझला गई। तुम परेशान न होओ।'

उस दिन तो बात इन्होंने सम्भाल ली। लेकिन कुछ ही दिन बाद बालों ने एक और गुल खिलाया। पति शाम को दफ्तर से लौटे, तो बहुत खराब मूड में। चाय भी नहीं पी। आते ही बगीचे में खुरपी लेकर जुट गए। बच्चों को डांट दिया। मुझसे नजरें चुराते



रहे। आखिर सह न पायी, तो मैंने घेर ही लिया, 'बात क्या है, बताते क्यों नहीं ?'

'कुछ नहीं।'

'कुछ तो है।'

'सुन कर क्या करोगी ?'

'फिर भी, बताओ तो।'

'तुम्हारे लिए एक रिश्ता आया है।'

'क्या मतलब ?'

मतलब यह कि एक सज्जन ऑफिस में मेरे पति के पास पहुंचे; यह समझ कर कि मैं उनकी बेटी हूं और अविवाहित हूं—वे विवाह का प्रस्ताव लाये थे। और मेरे पति ने उन्हें चपरासी से बाहर नहीं फिकवा दिया, यही बहुत था।

मेरे बालों ने कहर ढा रखा था। घर में बोझिल वातावरण रहता था। बाहर जाती, तो चुटकुले और चुटकियां चलती महसूस होतीं। एक मित्र ने जन्मदिन पर पुस्तक भेंट की 'स्वाभाविक और सुन्दर रहो।' दोस्त-अहबाब ही नहीं सारी दुनिया मेरे खिलाफ षड्यन्त्र कर रही थी। मैं किसी से मिलती, तो खुद उसके बालों पर नजर जाती। रंगे हुए बाल सख्त और बनावटी अलग पता चल जाते थे। सफेद-काले मिश्रित बालों से मुख सौम्य और कोमल जान पड़ता था। शीशा देखती, तो काले बालों के विरोध में गले, होठों और आंखों के पास झुर्रियां और गहरी दिखाई देतीं। ज्ञान कितना दुखदाई होता है, इंसान को कितना अकेला कर जाता है ! बार-बार पता लग रहा था। मेरी रातें फिर नींद से रिक्त थीं। भूख मर गई थी और भीतर युद्ध छिड़ा रहता था। बाल काले करने का किस्सा चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया, जब मेरी मां कलकत्ते से आईं और मुझसे मिलीं, तो बोलीं, अरे बाल रंगवा लिये !' और मेरे 'हां,' कहने पर मेरे अपने सगे दांतों की ओर देखती बड़ी मासूमियत से बोलीं, 'और दांत भी नकली बनवाए हैं क्या ?'

उस दिन मैंने प्रण किया कि सफेद बाल नापसन्द हैं, तो प्रसिद्ध अभिनेता यूल ब्रानर की तरह सिर घुटवा लूंगी, लेकिन बाल रगूंगी नहीं। आपकी क्या सलाह है ?

●

चना कुरमुरा

संगीत-सभा में नये गायक ने एक राष्ट्रभक्ति का गीत पेश किया। हॉल के कोने में एक व्यक्ति सिसकने लगा। महेश जी ने उस व्यक्ति से पूछा—

'क्या आप राष्ट्रवादी हैं ?'

'जी नहीं, मैं एक संगीतकार हूं।' उस व्यक्ति ने जवाब दिया।

●

जीवन के आखिरी वर्षों में बर्नार्ड शॉ को सबसे ज्यादा कोफ्त होती थी उन पत्रकारों से जो बार-बार भेंटवार्ता के लिए उन्हें परेशान करते। एक युवक पत्रकार ने किसी तरह टेलीफोन पर शॉ को पा ही लिया। 'कैसे हैं आप, मि० शॉ ?' पत्रकार ने बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

●

महेशजी (फिल्म समीक्षक से) : आप ने खुद तो कभी फिल्म बनाई नहीं। फिर आप क्या फिल्म-समीक्षा लिखेंगे ?

फिल्म समीक्षक : जनाब, मैं कभी मुर्गी की तरह अंडे नहीं दे सकता, लेकिन आमलेट के बारे में मुर्गी से ज्यादा जानकारी रखता हूं।

फिल्मी हस्तियों से दीवाना का नव वर्ष अनुरोध

हम चाहते हैं कि निम्न फिल्मी व्यक्ति नये वर्ष के यह संकल्प करें—



धर्मेन्द्र

हेमा मालिनी से मिलने जाते समय अपनी बीवी सदा साथ लेकर जाये।



अमजद खां

अमजद खां अपनी वर्थ डे पर अपने छत पर मय पार्टी के चढ़ कर जोर-जोर से गब्बर सिंह के डायलॉग पड़ोसियों को सुनाये। पार्टी में केवल जैमिनी व रैमन सर्कस के जोकरों को बुलाये।

आई० एस० जौहर

अपनी पुरानी बीवियों से सिगरेट-बीड़ी



व किराये के लिये उधार लिये पैसे फिल्म नसबन्दी की कमाई में से चुका दे।



देव आनन्द

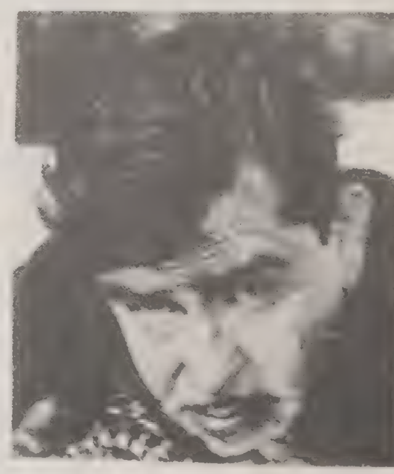
फिल्मों के टाइटलों में देव आनन्द अपने नाम के साथ अपनी आयु भी देना शुरू करे।

आर० डी० बर्मन

नये वर्ष से साल में कम से कम एक



गाने की धुन खुद बनायें (वर्ना तो १००% धुनें पश्चिमी देशों की हू-ब-हू नकल होती हैं।)



राजकपूर

राजकपूर साल में एक छोटे बजट की डाक्यूमेंट्री फिल्म बिना नये चेहरों को लेकर बनाये।



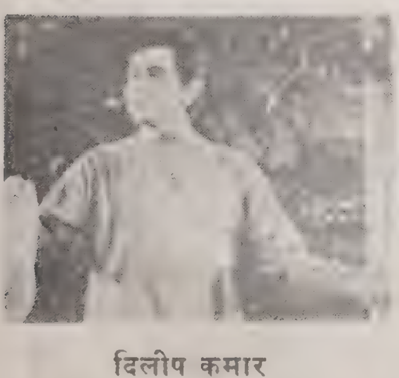
शत्रु

साल में एक बार विनोबा भावे के पास जाकर रहे और उनसे मौनव्रत की दीक्षा ले।



संजीव कुमार

ऑल इण्डिया वैचलर एंसोसियेशन की आजीवन मैम्वरशिप ले ले।



दिलीप कुमार

अपने पत्र C/o सायरावानो के पते पर मंगाये।



मनोज

अब से अपना नाम फिल्मों में भारत कुमार से बदल गिरगिट कुमार रखना शुरू करे।

जीनत अमान

अपने आंगन में तुलसी का पौधा लगा



ले और कॉकटेल पार्टियों में जाने से पहले उसकी पूजा करे।



प्रेमनाथ

५ रु० पुरस्कार जीतिए

आप सुझाइये कि प्रेमनाथ को नये वर्ष पर क्या दीवाना सकल्प करना चाहिये। दीवाना कार्यालय मे हल पहुंचने की अंतिम तिथि १४ जनवरी १९७८।

आहा हा!

एक अभिनेत्री और एक अभिनेता की कई फिल्में पिट गईं और उनका सितारा डूबने लगा। दोनों ने तय किया कि वे अपनी 'इमेज' सुधारने के लिए स्टेज पर एक कार्य-क्रम पेश करें। अभिनेत्री ने कार्यक्रम की रूपरेखा अभिनेता को बताई—'परदा उठेगा, मैं एक गीत गाऊंगी; परदा गिरेगा। फिर परदा उठेगा, मैं एक नृत्य करूंगी, परदा फिर गिरेगा। तीसरी बार परदा उठेगा, मैं वीणा पर राग खमाज पेश करूंगी, परदा गिरेगा। फिर···

'लेकिन इसमें मेरा रोल कहां है ?' अभिनेता ने बात काटते हुए पूछा।

'क्यों ? परदा अपने-आप उठेगा-गिरेगा क्या ?' अभिनेत्री बोली।

'मेरे जवान दोस्त; जब आप मेरी उम्र के हो जाते हैं तो या तो आप भले-चंगे होते हैं, या मर चुके होते हैं ! नमस्ते !' कहकर शॉ ने टैलीफोन बन्द कर दिया।

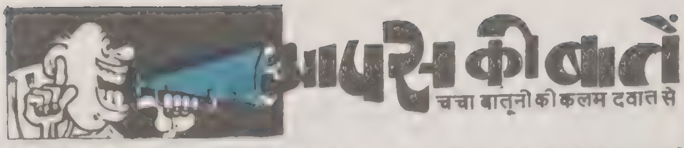
'तुम्हारी उम्र क्या है ?' महिला वकील ने पूछा।

'लगभग आपके जितनी', महिला गवाह ने उत्तर दिया।

एक पड़ोसी ने मुल्ला नसरुद्दीन से उन का गधा एक दिन के लिये मांगा। मुल्लाजी ने टालने की गरज से कहा, 'भाई, गधा तो एक दूसरे साहब को उधार दिया हुआ है।' इतने मे ही गधा जोर से रेंका, क्योंकि असल में तो वह मकान के पीछे ही बंधा हुआ था। पड़ोसी बहुत नाराज हुआ, 'वाह मुल्लाजी, इस उम्र में झूठ बोलते हैं आप ! गधा मौजूद है और आप कहते हैं कोई उधार ले गया है।'

मुल्लाजी ने ठंडी सांस भरकर कहा, 'अब ऐसे आदमी से क्या बहस की जाए, जो मेरा नहीं, मेरे गधे का एतबार करता हो।'

एक कार में पीछे के शीशे पर लगी चिट : 'ट्राफिक इन्स्पेक्टर कृपया नोट करें कि यह गाड़ी केन्द्रीय सरकार की सम्पत्ति है। सो ट्राफिक सम्बन्धी जुर्मानों के टिकटों की पांच प्रतिलिपियां आवश्यक है।'



अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

सत्यकाम शर्मा—कानपुर : मेरी आवाज किशोर कुमार जैसी है। क्या मुझे फिल्मों में 'प्लेबैक सिंगर' का चांस मिल सकता है ?

उ० : एक का शोर विविध भारती से बन्द होने पर कितना हंगामा हुआ है। वैसे ही शोर के लिए जोर आजमाने की बजाए आप अपनी कोई अलग आवाज पेश करें तो ज्यादा अच्छा है।

एम० एच० कादरी—बीकानेर : आप पाठकों के ढेर सारे पत्र देख कर घबरा तो नहीं जाते ?

उ० : घबराने की बजाए, जान में जान आ जाती है। पिछले दिनों एक बार हमें हार्ट अटैक हुआ था। आक्सीजन देने की बजाए डाक्टर ने हमारे सामने आपके पत्रों की एक बोरी उलट दी और पत्रों को देखकर हमारा दिल बैठते-बैठते एकदम स्टैंड-अप हो गया।

रमेश चन्द्र अग्रवाल—रोहतक : क्या आपको भूलने की बीमारी है, जो आप मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं देते ?

उ० : प्रश्न का उत्तर तो हाजिर है। फिर भी भूलने की बीमारी भयंकर रूप की है। एक बार जब हम होटल से बाहर निकलने लगे तो वेटर ने कहा, 'साहब आप कुछ भूल रहे हैं' हमने दिमाग पर जोर देते हुए कहा। 'क्या भूल रहे हैं ? टिप तो हमने तुम्हें दे दी है।' इस पर वेटर ने कहा, 'जी हां, पर आप खाना खाना भूल गये हैं।'

सुरेश खुराना—जींद : अगर आप भी हमारी तरह दीवाने बन गए तो हमारे प्रश्नों के उत्तर कौन देगा ?

उ० : हम तो सबसे पहले नम्बर पर २४ कैरेट के दीवाने हैं। इसके साथ ही···
प्रश्न आपके हमारे उत्तर दोनों की भरमार है,
होश नहीं है फिर भी यह दीवाना बहुत
होशियार है।

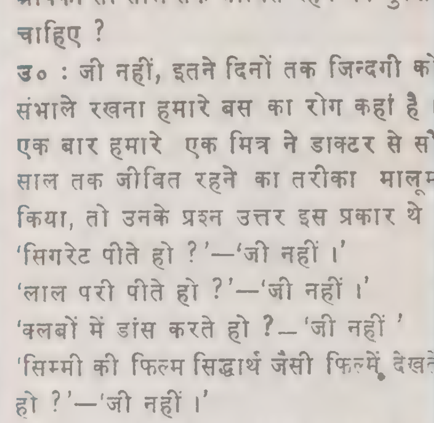
किशोर नारंग 'प्रेमी'—इन्दौर : चाचा जी, आप अ[illegible]ी जिन्दगी में क्या-क्या आजमाना चाहते हैं ?

उ० : बस जिन्दगी को ही आजमाना चाहते हैं। जिसके लिए कहा गया है,
क्या भरोसा है जिन्दगानी का,
आदमी बुलबुला है पानी का।

रवीन्द्र कुमार जैन—आगरा : चाचा जी, क्या आपको सौ साल तक जीवित रहने का नुस्खा चाहिए ?

उ० : जी नहीं, इतने दिनों तक जिन्दगी को संभाले रखना हमारे बस का रोग कहां है। एक बार हमारे एक मित्र ने डाक्टर से सौ साल तक जीवित रहने का तरीका मालूम किया, तो उनके प्रश्न उत्तर इस प्रकार थे :
'सिगरेट पीते हो ?'—'जी नहीं।'
'लाल परी पीते हो ?'—'जी नहीं।'
'क्लबों में डांस करते हो ?—'जी नहीं'
'सिम्मी की फिल्म सिद्धार्थ जैसी फिल्में देखते हो ?'—'जी नहीं।'
'फिर किस लिये जिन्दा रहना चाहते हो ?'

मौहम्मद इकबाल, नूरानी—बैतूल गंज : नेताओं को अपने भाषण जुबानी कैसे याद रह जाते हैं ?



उ० : भूखी जनता के सामने उसकी रोटी पर रोना हो तो इसमें याद रखने वाली बात कौन सी होती है। बस अपनी डबल रोटी याद रहे, यही काफी है। बीस साल पहले की बात है, एक बहुत बड़े नेता हमारे यहां आकर ठहरे। आज वह उससे भी बड़े लोकप्रिय नेता हैं। उनके पधारने से पहले हमें एक कागज दिया गया जिस पर नेता का भोजन और भोजन करने का समय लिखा हुआ था। सुबह नाश्ते में वह मक्खन टोस्ट और अंडों के सैंडविच और क्रीम कॉफी लेते हैं। दोपहर के भोजन में कीमा, पुलाव, सेब, अंगूर मौसमी का जूस और मूंग की दाल का हलवा और रात के डिनर में तंदूरी मुर्ग, चिकन सूप, भुने हुए काजू और सेब का रस। इस मीनो के अनुसार हमने उनके भोजन का प्रबन्ध कर दिया। नेता महोदय आए, हमारे यहां ठहरे और जनता की बड़ी भीड़ के सामने उन्होंने अपने भाषण में कहा, 'हमारा देश भूखा है, हमारी जनता भूखी है, बच्चे बीमार हैं, लोग बेरोजगार हैं···' और उस समय हम सोच रहे थे उस मीनो के बारे में जो हमें याद था।

ओमप्रकाश भठेजा—पानीपत : चाचा जी, चिल्ली लीला में सदा सिलबिल-पिलपिल ही क्यों होते हैं ?

उ० : क्योंकि इस लीला में वे आपके अधिक मनोरंजन की क्षमता रखते हैं।

सतपाल शर्मा—गुहला : डीयर अंकल, क्या आप हमें नए साल का कैलेंडर नहीं देंगे ?

उ० : प्रतीक्षा कीजिये, अवश्य देंगे। दीवानगी से भरपूर एक रंगीन कैलेंडर।

नारायन शर्मा 'सोच'—नाहरकटिया : चाचा जी, क्या आप मुझे अपने जूते साफ करने देंगे ?

उ० : क्या आपने भी हमारे पड़ोसी के लड़के लल्लू जैसा काम शुरू कर दिया है ? परसों ही की बात है, हमें पता चला कि लल्लू ने जूतों का नया-नया काम शुरू किया है। फ्लैक्स, बाटा, बालूजा, इम्पीरियल, जिस कम्पनी के जूते चाहियें वह डिस्पोजल में सस्ते दिलवा देगा। हम जूते खरीदने की बात करने उसके घर गए तो पता चला वह घर पर नहीं है। हमने घर के एक सदस्य से पूछा, फ्लैक्स, बाटा, बालूजा, किस दुकान पर जाने लगा है लल्लू ? इस पर जवाब मिला, यह तो पता नहीं पर आजकल वह मन्दिर जाने लगा है।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


पंचतंत्र
भाई, तुम साइबेरिया से आये हो न ?
हां, क्यों क्या वात है ?
तुम मेरा एक काम कर दोगे ?
उत्तरी ध्रुव पर मेरा एक मित्र पेंग्विन रहता है। मैं उसे नये वर्ष का तोहफा भेजना चाहता हूं। तुम किसी दिन साइबेरिया से से एक उड़ान भर कर यह काम कर देना। मैंने पिछले दो वर्षों से उत्तरी ध्रुव के स्थान पर दक्षिणी ध्रुव जाना शुरू किया है, इसीलिये मुलाकात नहीं हो पाती। पहली जनवरी को तुम्हें थमा दूंगा वह चीज।
अच्छी बात है।
नया साल मुबारक हो तुम्हें।
हैप्पी न्यू इयर टू यू।
यही है वह तोहफा! नये साल का हाल बता देना और मेरी राजी-खुशी का हाल बता देना। तुम्हारी बड़ी कृपा होगी।
एडरेस तो याद है न ?
तुम चिन्ता न करो, मैं उसे खोज कर यह दे दूंगा।
तो तुमने अपने दोस्त को कैलेंडर भेजा है ? वह पढ़ना तो जानता नहीं, कैलेंडर उसके किस काम आयेगा ?
पढ़ना तो वह वाकई नहीं जानता लेकिन
तुम्हें पता है उत्तरी ध्रुव पर छः महीने दिन और छः महीने रात होती है। दूसरे शब्दों में एक लम्बा दिन और एक लम्बी रात हुयी इसलिये
जव उसे कैलेंडर नजर आयेगा वह दिन होगा और जव नजर नहीं आयेगा तव रात होगी। हो गया साल पूरा।
शिक्षा—अक्ल का इस्तेमाल करने के लिए पढ़ा-लिखा होना जरूरी नहीं है।

पृष्ठ १२ से आगे

है ? क्या काम करता था ? इसकी हत्या क्यों की गई ? सबसे बड़ा सवाल यह है कि इसे मार डालने के बाद इसके सूटकेस के साथ यहां क्यों लाया गया ?'

'इन सवालों का हम अभी क्या जवाब दे सकते हैं !' इन्स्पेक्टर शर्मा ने बलजीत की श्रेष्ठता को मानते हुए कहा, 'आप ही इन पहेलियों को सुलझा सकते हैं।'

'ठीक है. आप अभी लाश को पोस्ट-मार्टम के लिए ले जाइये।' बलजीत ने कहा, 'मगर पोस्ट-मार्टम से पहले इसकी शिनाख्त कराने की भरपूर कोशिश कीजिये।'

'अखबारों में इसकी फोटो छपवानी पड़ेगी।'

'हां। आपको जो कुछ भी जानकारी मिले, उसकी सूचना मुझे भी देते रहियेगा।'

'जरूर ! मैं आशा करता हूं कि आपका हमें पूरा सहयोग मिलेगा।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! मैं अपना कर्त्तव्य कभी नहीं भूलता। पुलिस और कानून की मदद करना मेरा सबसे बड़ा कर्त्तव्य रहा है।'

'शुक्रिया !'

इन्स्पेक्टर शर्मा ने लाश मुर्दा गाड़ी में रखवाई और सूटकेस उठाकर अपने कर्मचारियों के साथ चला गया।

अब जासूस मंडली और दोनों सेठ ड्राइंग रूम में आ बैठे। उनके लिए कॉफी आ गई।

सेठ रघुनन्दन ने खुलकर कहा, 'मेरी समझ में नहीं आता कि एक अजनबी की लाश मेरे ही बंगले में लाकर क्यों छिपाई गई ? जरूर इसके पीछे कोई खतरनाक चाल होगी।'

सेठ रामचरण ने कहा, 'मुझे विश्वास है कि इस पहेली को बलजीत बाबू हल करके ही रहेंगे।'

'बलजीत बाबू !' सेठ ने प्रार्थना करते हुए कहा, 'आप किसी तरह यह केस सुलझा दें, मैं आपकी हर सेवा करने को तैयार हूं।'

'मैं अपनी तरफ से कोई कसर उठा नहीं रखूंगा।' बलजीत ने विश्वास दिलाया।

'रात बहुत जा चुकी है, अब चलना चाहिये !' सेठ रामचरण ने कहा, 'आइये बलजीत बाबू, मैं आपको आपके होटल तक छोड़ आऊं।'

सेठ रघुनन्दन को दिलासा देकर बलजीत उठा और साथियों को लेकर सेठ रामचरण की कार में आ बैठा। अभी उनकी कार 'कारोनेशन होटल' से बहुत दूर थी। वे एक वीरान सड़क पर जा रहे थे।

तभी गोली चलने की आवाज आई। गोली कार की बॉडी में लगी। कार आगे निकल आई।

अनिला बोली, 'मैंने एक पेड़ के पीछे से शोला लपकता देखा है।'

राजीव ने कहा, 'यह हमारे ऊपर हमला हुआ है। कोई हमारी निगरानी करता रहा कि हम सेठ रघुनन्दन के बंगले में थे। उसने अपने साथी को इतनी जल्दी सूचना कैसे दे दी कि हम इस सड़क से वापस जा रहे हैं ?'

'सेठ जी, कार मोड़ लीजिये।' बलजीत ने कहा, मगर अगले ही क्षण इरादा बदल दिया, 'नहीं. सीधे होटल ही चलिये।'

'क्यों ?' राजीव ने हैरत से पूछा।

'यह एक धमकी थी कि हम इस केस में टांग न अड़ाएं। हमलावर धमकी देकर भाग गया होगा। राजीव, तुम्हारा अनुमान सही है कि कोई सेठ रघुनन्दन के बंगले की निगरानी करता रहा है। उसीने 'टू-वे' रेडियो-ट्रांसमीटर पर अपने साथी को सूचित कर दिया कि हम अब वहां से लौट रहे हैं। इसका मतलब यह है कि दुश्मन दिलेर है और हम से टक्कर लेने के लिए तैयार है।'

सेठ रामचरण हक्काबक्का रह गया था। उसका ध्यान कहीं और था और अभ्यास के कारण कार सम्भाले हुए था। यह सोचकर वह कांपे जा रहा था कि गोली उसे भी लग सकती थी।

राजीव ने कहा, 'मेरे विचार में दुश्मन ने रायफल का इस्तेमाल किया है। उतनी दूर से पिस्तौल या रिवाल्वर की गोली कार तक नहीं पहुंच सकती थी।'

'हाँ, आवाज भी कुछ ऐसी ही गूंजी थी।' बलजीत ने कहा।

'कारोनेशन होटल' के लॉन में पहुंच कर बलजीत ने कहा, 'राजीव और अनिला होटल में जाते हैं। आइये, मैं आपके साथ चलता हूं।'

सेठ रामचरण की जान में जान आ गई। वह मन-ही-मन कांपे जा रहा था कि ऐसे भयानक अपराधियों की नजर में आकर वह कैसे बच सकेगा ?

उसके बंगले में पहुंचकर बलजीत ने उसे तसल्ली दी, 'सेठ रामचरण जी ! आप बेकार में न घबराइयेगा। दुश्मन की आपसे कोई बैर नहीं है। गोली हमारे ऊपर चलाई गई है। जाइये, आराम से सो जाइये।'

'आप कैसे जायेंगे ?' सेठ ने पूछा।

'टैक्सी ढूंढ़ूंगा।'

'हर्गिज नहीं। आप यह कार लेते जाइये। मेरे पास और भी कारें हैं। जब तक आप यहां हैं, यह कार आप ही के पास रहेगी।'

'बहुत-बहुत शुक्रिया ! इससे मुझे दौड़-धूप करने में आसानी रहेगी।' यह कहकर बलजीत ने वह कार अपने अधिकार में ले ली।

सुबह के नौ बजे थे।

बलजीत, राजीव और अनिला होटल के अपने कक्ष में चाय पी रहे थे।

दरवाजे पर दस्तक हुई।

अनिला ने उठकर दरवाजा खोला।

सामने एक युवक दिखाई दिया। वह अड़तीस साल की आयु के आसपास था। उसने सिर झुकाकर अनिला को सम्मान दिया और बोला, 'मैं बलजीत बाबू से मिलना चाहता हूं।'

'जरूर मिलिये।' अनिला ने दरवाजे में से हटते हुए कहा, 'आ जाइये।'

युवक अन्दर चला आया।

अनिला दरवाजा भिड़ाकर लौट आई।

युवक ने राजीव और बलजीत को हाथ जोड़कर 'नमस्ते' कही और बोला, 'मैं अखबार में एक दर्दनाक खबर पढ़कर आपकी सेवा में आया हूं।'

'कैसी खबर ?' बलजीत ने युवक के चेहरे पर नजरें गड़ाकर पूछा।

'किसी जयदयाल की हत्या के बारे में। उसमें यह भी छपा है कि इस हत्याकांड में आप पुलिस को सहयोग दे रहे हैं।'

'आप कौन हैं ?'

'मेरा नाम नवलकिशोर पाण्डे है और मैं यहां एक कालिज में इतिहास का प्रोफेसर हूं।'

'बैठिये। मैं बलजीत हूं।' बलजीत ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, 'आइये, नाश्ता कीजिए।'

'मैं नाश्ता करके आया हूं।' नवल किशोर टेबल के पास कुर्सी खींचकर बैठ गया।

'कहिये, आप क्या कहने आए हैं ?' बलजीत ने युवक से पूछा।

'मैं पहले यह बता दूं कि जयदयाल की हत्या के बारे में मैंने सारा किस्सा पढ़

शेष पृष्ठ १० पर

मदहोश



परिणाम

नायलोन जुराबे जीतिये वर्गपहेली का हल

जा[1]	म[2]	न[3]	ग	र[4]
ग[5]	ग	न		त
ते		द[6]	ह[7]	ला
र[8]	खो[9]		क[10]	म
हो[11]	द	व	ला	

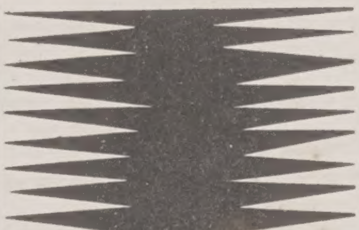
निर्णय लाटरी द्वारा किया गया है

विजेता है :

सपनी C/O श्री सोधो सिंह
सेक्टर आफिसर - मेरठ

नजरों का धोखा

यह ढेरी आपको ऊंचाई में अधिक लगती है या चौड़ाई में ? नाप कर देखिये ।



दिमाग लड़ाइये

निम्न पांच चीजों में क्या समानता है आपको यह बताना है ।

१. केशर
२. बीमारी
३. जेल
४. सीकर
५. एकड़

उत्तर—इन सबका प्रारम्भ अंग्रेजी के अक्षरों से होता है—K, B, J, C, और A ।

गुमनाम नं॰ 23 का हल

"जोगिन्द्र" धड़

विजेता : दिलरुबा सनम मालवीय नगर नई दिल्ली

दीवानी बात : कंपा दिया है बड़ों-बड़ों को मेरे नामने ।
क्या टिक पाएगा मुहम्मद अली मेरे सामने ॥

पृष्ठ ३८ से आगे

लिया है।'

'क्या आप जयदयाल जी को जानते थे ?'

'बिल्कुल नहीं। खबर में बताया गया है कि उनके सूटकेस में से तीन भयानक खिलौने निकले हैं। मैंने लाश की फोटो भी ध्यान से देखी है। आप यह सुनकर दंग रह जायेंगे कि मृतक ने जो सूट पहन रखा था, वह मेरा है।'

'क्या ?' बलजीत के हाथ में प्लेट पर रखा प्याला हिल गया।

'वह सूटकेस भी मेरा है जिसमें से भयानक खिलौने निकले।

अनिला और राजीव की आंखें हैरत से फैल गईं।

बलजीत को भी जैसे विश्वास नहीं आ सका। उसने पूछा, 'वह सूटकेस, भयानक खिलौने, सूटकेस में रखे लिबास और मृतक के बदन पर सूट···आपका है ?'

'जी हां।'

'आप···'

'मैं कुंआरा हूं। अशोक मार्ग की भागीरथ बिल्डिंग के फ्लैट नंबर चार में रहता हूं। मैं सात दिन की छुट्टी पर था। माता-पिता से मिलने गांव गया था। कल रात ही लौटा हूं। मैं गांव में शहर वाले लिबास नहीं पहनता। इस समय भी मैं आपके सामने सादा लिबास में हूं। आज जब मैंने जयदयाल की हत्या का समाचार पढ़ा तो मेरी सिट्टी गुम हो गई। तब मुझे मालूम हुआ कि मेरे सर्दियों के लिबास, मेरे बनाए खिलौने और सूटकेस गायब थे। मैं नहीं जानता कि मेरा सूटकेस कब चुराया गया।'

'वो भयानक खिलौने आपने बनाए थे ?' बलजीत को हैरानी हो रही थी।

'जी हां। बात यह है कि मुझे बुत बनाने का शौक है।'

'इतने भयानक बुत बनाने का शौक ?'

'बलजीत बाबू ! आदमी के जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं भी हो जाती हैं जो भुलाये पर भी नहीं भूलतीं। मैं उन्हीं घटनाओं के आधार पर बुत बनाता हूं।' नवलकिशोर ने कहा।

'पाण्डे जी ! आपके बनाए खिलौनों का किन घटनाओं से सम्बन्ध है ?'

'मैंने गांव में एक नाले के पास सांप और नेवले की लड़ाई देखी थी। वह लड़ाई मेरे दिल-दिमाग पर छाकर रह गई।'

'और वो चुड़ैल औरत ?'

'गांव में एक औरत थी जो बरसात में अधपगली हो जाती थी। वह चिल्लाया करती थी कि उसे एक चुड़ैल दिखाई देती है। उस चुड़ैल की शक्ल वह हरेक को बताया करती थी।'

'और वो छुरा, औरत और मर्द का बुत ?'

'गांव में एक बांझ औरत थी। वह जादू-टोने और झाड़-फूंक कराया करती थी, ताकि मां बन सके। इन्हीं दिनों एक साधु ने गांव के बाहर झोंपड़ी डाल ली। उसके बारे में अफवाह उड़ी कि उसके मंत्र से बांझ औरत भी मां बन सकती है। वह औरत उस साधु की झोंपड़ी में गई तो उसकी आबरू लूट ली गई। औरत ने उसके कुकर्म का भण्डाफोड़ करना चाहा तो साधु ने उसे छुरा घोंपकर जान से मार डाला। इन्हीं घटनाओं को मैंने बुतों का रूप दे डाला।'

'ओ···ह !' बलजीत के मुंह से निकला।

'बलजीत बाबू ! जब से मैंने खबर पढ़ी है, मेरा दिल धड़क रहा है। लगता है कि कोई मुझे हत्या के जुर्म में फंसाना चाहता है। मैं आपसे शरण मांगने आया हूं। मुझे बचा लीजिये !'

बलजीत भी हैरान था। हत्यारे ने बड़ी चालाकी से नवलकिशोर और सेठ रघुनन्दन को हत्या के चक्कर में जकड़ने की कोशिश की थी। लिबास, भयानक खिलौने और सूटकेस नवलकिशोर के थे, जबकि लाश सेठ रघुनन्दन के वार्डरोब में पाई गई। इस तरह पुलिस की नजरों में सेठ रघुनन्दन और नवलकिशोर पाण्डे मुजरिम सिद्ध होते थे।

प्रश्न यह उठता था कि लाश को मसाला लगाकर पांच दिन सुरक्षित क्यों रखा गया ? क्या मृतक का नाम जयदयाल ही था ? मृतक के तन पर नवलकिशोर का सूट क्यों पहनाया गया ? लाश को सेठ रघुनन्दन के बंगले में क्यों पहुंचाया गया ?

बलजीत के पास अभी इन प्रश्नों का कोई उत्तर न था। उसने नवलकिशोर को धीरज बंधाया और कहा, 'आप निश्चिन्त रहिये। मैं आपकी हर तरह से मदद करूंगा।'

'धन्यवाद ! यह बताइये कि मैं आपकी क्या सेवा करूं ?'

'पाण्डे जी ! मैं सेठ रघुनन्दन के लिए इस केस को हल कर रहा हूं। आपको मेरी सेवा करने की चिन्ता में नहीं पड़ना चाहिए। यह बताइए कि आपका अपना फो[ne]

'जी हां, नम्बर है—४४३३

बलजीत ने यह फोन-नम्बर लिया।

प्रोफेसर नवलकिशोर पाण्डे बाद राजीव और अनिला ने ब प्रश्नसूचक आंखों से देखा।

बलजीत बोला, 'प्रोफेसर न की बात से साबित हो गया है ि बड़ी सावधानी से काम ले रहा है

अनिला ने कुछ कहने को ही था कि टेलीफोन की घंटी बज

बलजीत उठकर फोन वा पास गया। उसने रिसीवर उठा 'बलजीत स्पीकिंग।'

'बलजीत बाबू ! मैं इन्स्पे बोल रहा हूं। दस बज चुके हैं। लाश को कोई नहीं पहचान सका

'आपके विशेषज्ञ की लाश क करने पर क्या धारणा बनी ?'

'उसने वही कहा है जो आ था। लाश छः दिन पुरानी है औ का करंट लगने से मौत हुई है।'

'मैं भी आपको कुछ बतान हूं ?' बलजीत बोला, 'मृतक ने पहन रखा था, वह यहां के प्रोफे किशोर पाण्डे का है।'

'सचमुच ?'

'जी हां, वह सूटकेस, भयान और सूटकेस में रखे कपड़े भी प्रोफे के हैं।'

'इसका मतलब है कि प्रोफे का जयदयाल से मेलजोल था। उसने उसे अपना सूटकेस दिया !'

'नहीं, इन्स्पेक्टर साहब ! चुराया गया था।'

'ओ···ह।'

'यह भी सुन लीजिये कि कल मैं सेठ रामचरण के साथ लौट र हमारे ऊपर गोली चलाई गई।'

'ओह ! किसी को लगी तो

'कार की बॉडी में लगी चलाने का मतलब समझ रहे हैं न

'मैं अभी कुछ नहीं समझा।'

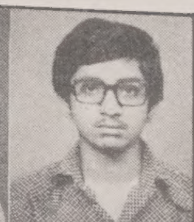
'मतलब यह है कि इस केस आना किसी को पसन्द नहीं। दुश्म चेतावनी दी है।'



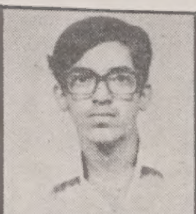
...ोग्राही, स्पोटी ... नं. ३. ग्रार./ ... फिल्म देखना, ... इशिर करना, ... ।



राकेश कुमार गर्ग, एफ./३६६ कर्मपुरा नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, चुटकले सुनना ग्रादि ।



इरफान मुहम्मद, पहला माला, १०८, सुफया जुवे रोड, बम्बई, १६ वर्ष, मूछें बनाना, गप्प मारना सिर के बाल बढ़ाना ।



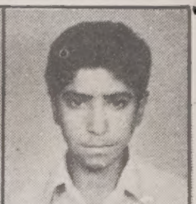
सुरेश बालचंदानी, घनश्याम निवास, खदान कैम्प, ग्रकोला, १७ वर्ष, युवक-युवतियों से पत्र-मित्रता तथा डाक टिकट संग्रह करना ।



विकास गखड़ डब्ल्यू. एच. १०/२ बस्ती रोड, जालन्धर शहर, १४ वर्ष, गीत गाना ग्रौर एक्टिंग करना व देश का दौरा करना ।



सुरेश कुमार बुधवानी, बैरन बाजार, रायपुर (म. प्र.), १६ वर्ष, कैरम खेलना, पत्र-मित्रता करना, फिल्में देखना ग्रादि ।



प्रवीण कुमार (कुमार), बी. ८/२१ कृष्ण नगर, दिल्ली, १७ वर्ष, घूमना, पढ़ना, दोस्ती करना, स्कूटर चलाना ग्रौर फैशन करना ।



...हिरी, मंगल ... वर्ष, ग्रभिनेता ... देखना ग्रौर ... रह कर उनसे ... दीवाना पढ़ना ।



प्रकाश चौकड़े, जी० सी० चौकड़े, ग्रार. पी. एफ. लाईन, ब्लाक नं. ८६६/२, बिलासपुर, १४ वर्ष, टिकट संग्रह करना ।



सुबोध चन्द्र द्वारा श्रीराम हर्ष दास (प्रशाखा पदाधिकारी), लोक निर्माण विभाग, बाढ़, जि० पटना, १८ वर्ष, स्कूटर चलाना, पत्र-मित्रता ।



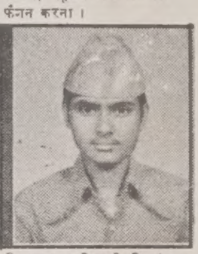
नारायण प्रसाद नारनोली, पुरानी मजार, मुजफ्फरपुर, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, कहानी सुनना, मित्रता करना, व्यापार करना ।



गिरीश चन्द्र नाथ (प्रेसीडेंट स्काऊट), बादल नाथ भवन, प्रथम पोल, म. नं. २ ए, जोधपुर (राज.), १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, बाजा बजाना ।



सन्तलाल भाभा द्वारा श्री रामकरण भाभा, गांव व डा० कुलाना, हांसी हिसार (हरि.) २१ वर्ष, घूमना फिरना, सी० ग्राई० डी० करना ।



निरप चन्द्र ग्रधिकारी, बिरगंज (माईस्थान), १६ वर्ष, रेल से यात्रा करना, पत्र-मित्रता करना, बढ़ती मंहगाई का विरोध करना ।



...वास्तव, ग्राम ... जि० बस्ती, ...नी व कविता ...ी के ग्रन्धेरे ... को ढूंढ़ना ।



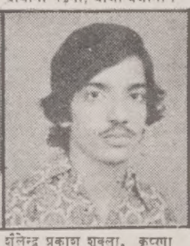
धनपत राज पी. जैन, भारत वस्त्र सेन्टर, स्टेशन रोड, भाण्डप (बम्बई), १६ वर्ष, भैंस के सींगों में पर डालना, दूसरों को हंसाना ।



ग्रन्तरिक्ष कुमार बनवासी, डाबरी पीठा, उज्जैन (म. प्र.). १२ वर्ष, कहानी एवं दीवाना पढ़ना, टिकट संग्रह करना व ग्रावारा घूमना ।



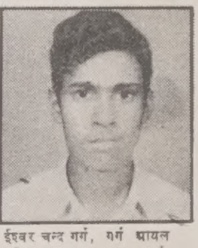
शिव कुमार देवागन, खरोरा, रायपुर (म० प्र०), २२ वर्ष, पत्र-मैत्री करना, खूब खाना, खूब हंसना, नए-नए मित्र बनाना ।



शैलेन्द्र प्रकाश शुक्ला, कृष्णा बुक डिपो, हींग की मंडी, ग्रागरा, हेमा मालिनी की फिल्म देखना, नावल बेचना, प्रेम करना ।



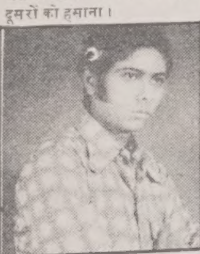
गुरु भेज सिंह सलूजा, म. नं. १०४/११, गुरु नानकपुरा, फैजाबाद, १३ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना, टिकट संग्रह करना ।



ईश्वर चन्द गर्ग, गर्ग ग्रायल स्टोर, बखाला, १७ वर्ष, दूसरे देशों का भ्रमण करना, ड्राईविंग करना ग्रौर नई-नई खोज करना ।



...ना द्वारा श्री ...धान, रेलवे ... १४ वर्ष, ... उपन्यास



ईसर दास बुध, ग्रमर भवन चौक, पानीपत, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना, बड़ों का ग्रादर करना व बाल बढ़ाना ।



राजेन्द्र कुमार लोहिया, न्यू मार्केट, डिब्रूगढ़ (ग्रसम), १५ वर्ष, रेडियो सुनना, फिल्म देखना, नावल व ग्रन्य पत्रिकायें पढ़ना ।



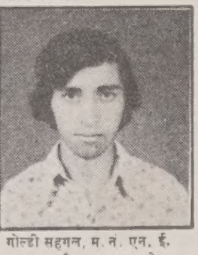
शैलेन्द्र कोठारी, २८, सीतला माता बाजार, इन्दौर, ११ वर्ष, सिनेमा देखना, दीवाना पढ़ना, पतंग उड़ाना व गाय की सेवा करना ।



सतीश कुमार गुप्ता, १२/२३ ब्रह्मनाल, वाराणसी, १६ वर्ष, दीवाना तेज पढ़ना व डाक टिकट संग्रह करना, शेर से कुश्ती लड़ना ।



मनीश गोपाल, सी.-३/११३, ग्रशोक विहार फेज II, दिल्ली, १८ वर्ष, शतरंज खेलना, पत्र-मित्रता करना ग्रौर दीवाना पढ़ना ।



गोल्डी सहगल, म. नं. एन. ई. १२६, मौ० महगला गेट, खिंगरा, जालन्धर, २० वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना व कवि सम्मेलन में भाग लेना ।



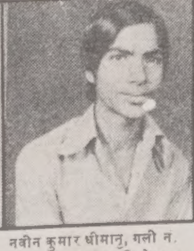
...ट, शिवगंज, ...र (बिहार), ...व कवितायें ...वर्ग से पत्र-



विनोद कुमार बतरा, तिकोनिया रोड, हलद्वानी (नैनी.), १८ वर्ष, स्कूटर चलाना, कार चलाना, दीवाना पढ़ना व क्रिकेट खेलना ।



यशवन्त कुमार कड़ेला द्वारा श्री एन. के. रोथर, ७२, देवी बड़वानी, जि० खरगोन, २५ वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना, पत्र-मित्रता करना ।



नवीन कुमार धीमान, गली नं. १०, म० नं० १, फिरोजपुर छावनी, १६ वर्ष, फिल्में देखना, दीवाना पढ़ना, नावल पढ़ना, झगड़ा निपटाना ग्रादि ।



रत्नेश कुमार बरिग्रार द्वारा श्री सिद्धेश्वरी प्र०, सालिमपुर ग्रहरा, पो० ग्रा०, कदम कुंग्रा, पटना, १७ वर्ष, टिकट संग्रह ग्रादि ।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ________ शौक ________

...ना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रैंड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लि... न भूलें।

... दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२ जनवरी से ८ जनवरी ७८ तक



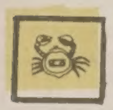
मेष : राजकर्मचारियों से कुछ परेशानी या किसी से व्यर्थ में झगड़ा हो सकता है, खर्चा कुछ बढ़ेगा, आमदनी भी यथार्थ ही होगी और कारोबार की स्थिति संतोषजनक चलेगी, यात्रा में सुख एवं सफलता भी रहेगी।



वृष : प्रयास करते रहें, सफलता भी मिल जावेगी भले ही कुछ देरी से मिले, संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा और कुछ अप्रिय घटनायें भी हो सकती हैं, परिश्रम करके आप हालात पर काबू पा सकते है।



मिथुन : सभा समाज के कामों में समय अधिक व्यतीत होगा, आय में वृद्धि और कामकाज की दशा में भी सुधार होगा, परन्तु इतना कुछ होते हुए भी आप आशातीत लाभ न उठा सकेंगे।



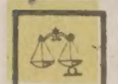
कर्क : यह सप्ताह आपके लिए अनुकूल नहीं कहा जा सकता, विरोधी अपना दवाब बढ़ायेंगे और हानि पहुंचाने में लगे रहेंगे, यात्रा भी हो सकती है जिसमें व्यर्थ का व्यय होगा और परेशानी भी बढ़ेगी।



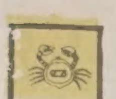
सिंह : शुभ-अशुभ मिश्रितफलों से युक्त सप्ताह कहा जा सकता है, कुछेक कामों में सुधार होगा और कोई अधूरा पड़ा काम भी बन जावेगा परन्तु किसी-किसी समय आप आर्थिक तंगी महसूस करेंगे।



कन्या : आर्थिक दृष्टि से सप्ताह ठीक ही रहेगा, फिर भी किसी भारी खर्चा आने के कारण आप तंगी का अनुभव करेंगे, कारोबारी हालात अनुकूल चलेंगे, लाभ भी अच्छा होता रहेगा।



तुला : व्यापारिक कामों में कुछ परेशानी या व्यस्तता काफी रहने पर आप थकावट या कमजोरी महसूस करेंगे, अच्छी आमदनी होने के साथ-साथ व्यय भी काफी होता रहेगा, यात्रा सावधानी से करें।



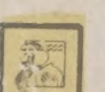
वृश्चिक : पिछले सप्ताह की तुलना में यह सप्ताह कुछ अच्छा रहेगा, प्रारम्भ में कुछ उलझनें तो बढ़ेंगी परन्तु बाद में उनका समाधान होता जावेगा और वातावरण में भी सुधार होगा।



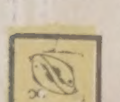
धनु : काफी संघर्षपूर्ण हालात का सामना करना होगा, कोई नया काम शुरू न करें और प्रत्येक कार्य में बड़ों का परामर्श ले तो अच्छा लाभ प्राप्त हो सकता है, सुस्ती या थकावट महसूस होती रहेगी।



मकर : कामकाज में रुचि कम फिर भी लाभ पहले समान होता रहेगा, सभा समाज के कामों में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी, विरोधी पग-पग पर परन्तु आपका सामना न कर पायेंगे, समय अच्छा व्यतीत होगा।



कुम्भ : इन दिनों काफी संघर्ष का सामना करना पड़ेगा, परिश्रम अधिक परन्तु लाभ आशा से कम या देरी से मिलेगा, आय यथार्थ और खर्चा बढ़ेगा, आर्थिक तंगी महसूस होगी फिर भी हालात ठीक रहेंगे।



मीन : इस सप्ताह शुभअशुभ मिश्रितफल प्राप्त होते रहेंगे, किसी पुरानी समस्या से छुटकारा मिलेगा परन्तु साथ ही साथ कोई नई उलझन भी पैदा हो सकती है, कुसंगति से बचें, परिवार से सुख मिलेगा।

दीवाना के पाठक-पाठिकाओं को नव-वर्ष शुभ हो,

विद्या सिन्हा

एक सीधी-सादी कन्या

● विजय भारद्वाज



विद्या सिन्हा का नाम जवान पर आते ही एक भारतीय नारी का सीधा-सादा सरल रूप दिमाग में उतरता चला जाता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह रुपहली पर्दे वाली कोई परी नहीं है अपितु अपने ही पड़ोस में रहने वाली कोई नारी हैं। ऐसा क्यों महसूस होता है? तथा अन्य अभिनेत्रियों के साथ ऐसा महसूस क्यों नहीं होता? तो उसका एकमात्र कारण है विद्या सिन्हा का सीधा-सादा व्यक्तित्व जो एकाएक ही किसी का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है।

फिल्म 'छोटी सी बात' में इन्होंने अपने निजी जीवन जैसा साधारण रूप पर्दे पर पेश किया वह भी एक नए कलाकार अमोल पालेकर के साथ, जो दर्शकों को बेहद पसन्द आया। अन्य अभिनेत्रियों की तरह इन्होंने लेशमात्र भी सैक्स या ग्लैमर का सहारा नहीं लिया। 'कर्म', 'मुक्ति', व 'चालू मेरा नाम', जैसी फिल्मों में इन्होंने विभिन्न भूमिकाए निभायीं जो दर्शकों द्वारा सराहनीय रहीं। सैक्स व ग्लैमर के बिना प्रसिद्धि प्राप्त करने में जया भादुड़ी के बाद विद्या सिन्हा का नाम ही आता है जो आज भी उसी रूप में सफलता प्राप्त कर रही हैं।

खूबसूरती व भोलेपन में इन्हें 'ऊपर वाले ने उपहार दिया है। स्वभाव में खुश मिजाज हैं तथा औरतों की तरह 'तेरी-मेरी' करने की इनकी जरा भी आदत नहीं है। इन्हें गुस्सा तब आता है जब कोई इनके बारे में झूठी खबरें उड़ाता है। विद्या सिन्हा के अपने शब्दों में—'एक दिन में निर्देशक बासु दा के साथ कार में जा रही थी। किसी बात पर हम दोनों हंस रहे थे तभी हमने एक कार को 'ओवरटेक' किया जिसमें एक (औरत) पत्रकार बैठी थीं जो बम्बई से प्रकाशित किसी अंग्रेजी पत्रिका में लिखती हैं। कुछ दिनों बाद उसने उसी अंग्रेजी पत्रिका में यह लिख दिया कि मैं बासु दा की गोद में बैठी हुई थी और बासु दा मुझे कार चलाना सिखा रहे थे। पढ़कर मुझे इतना गुस्सा आया कि पूछो मत। बासु दा मेरे पिता समान हैं मैं उसी रूप में उनकी इज्जत करती हूं। उस बुद्धिजीवि के बुद्धपन से किसी के विवाहित जीवन पर कितना असर पड़ सकता है शायद उसने यह नहीं सोचा। इसके बाद वही पत्रकार एक दिन मेरे से मिलने मेरे घर आयीं। मैंने पुरानी बात याद दिलायी तो वह क्षमा याचना करने लगीं। पता नहीं ऐसी घटिया पत्रकारिता से क्या मिलता है इन्हें? मैं परीक्षत साहनी के घर आती-जाती रहती हूं। लोगों ने मेरे और परीक्षत साहनी जी के संबंधों पर कीचड़ उछालनी शुरू कर दी। जबकि सभी जानते हैं कि हम दोनों ही विवाहित हैं। शायद किसी को यह नहीं मालूम कि परीक्षत जी की पत्नी अरुणा साहनी मेरी मित्र हैं। इन अफवाहों की वजह से मैं किसी फिल्मी पार्टी में नहीं जाती।'

अपनी सीधी-सादी इमेज को संभाल कर रखना फिल्म नगरी में वास्तव में कठिन है। इसीलिए यह शूटिंग से सीधी घर आती हैं और अपने पति वेंकट का पूरा ध्यान रखती हैं। दीवाना की यह नियमित पाठिका हैं।

नववर्ष के अवसर पर दीवाना के पाठकों को विद्या सिन्हा की ओर से शुभ कामनाएं। दीवाना के पाठक उन्हें इस पते पर अपनी शुभ कामनाएं भेज सकते हैं।

२, श्री जी निकेत

किंग्स सर्किल-बम्बई